

शुक्ल शुक्लदास शुक्लदास शुक्लदास

रुद्रीपाठ का विविध फल

७२

रुद्रीसंख्याफलं देवि शृणुष्व वदतो मम ।
 एकावृत्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते ॥ १ ॥
 सङ्कल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यासाङ्गेषु सकृत् सकृत् ।
 स्नात्वा पञ्चामृतेनैव ध्यानपूर्वं शिवं जपेत् ॥ २ ॥
 बालग्रहोपशान्त्यर्थमेकावृत्तिमुदीरयेत् ।
 उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३ ॥
 ग्रहोपशान्त्यै कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने ।
 महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ४ ॥
 नवावृत्या भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत् ।
 राजवश्ये विभूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ५ ॥
 रुद्रैस्त्रिभिः कामसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ।
 शत्रुश्च पञ्चमी रुद्रैस्तथा स्त्री वश्यतामियात् ॥ ६ ॥

सौख्यं स्यात्सप्तमी रुद्रैः शिवमाप्नोति मानवः ।
 नवद्वैः पुत्रपौत्रधनधान्यसुतान्वितः ॥ ८ ॥
 राजभीतिविनाशाय वैरस्योच्चाटनाय च ।
 धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनाय ततः परम् ॥ ९ ॥
 अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्ययशःश्रियै ।
 राजवृद्धिप्रदेयाय महारुद्रैकसंख्यया ॥ १० ॥
 त्रिभिश्चैव महारुद्रैरसाध्यसाधनाय च ।
 पञ्चभिश्च महारुद्रैः राज्यकामः प्रसाध्यते ॥ ११ ॥
 सप्तभिश्च महारुद्रैः सप्तलोकः प्रसाध्यते ।
 नवभिश्च महारुद्रैः पुनर्जन्म न जायते ॥ १२ ॥
 अतिरुद्रैकसंख्येन देवत्वं प्राप्नुयान्नरः ।
 डाकिन्यादिभये प्राप्ते एकावृत्तिं जपेन्नरः ॥ १३ ॥
 भूतप्रेतपिशाचानां भये च गुणवृत्तितः ।
 ग्रहदोषदशायाञ्च पञ्चावृत्तिं न संशयः ॥ १४ ॥

ज्वरातिसारदोषादौ वातपित्तकफादिषु ।

सर्वरोगोपशान्त्यर्थं सप्तावृत्तित्र संशयः ॥ १४ ॥

सर्वार्थसाधनायैव नवावृत्तिं पठेन्नरः ।

असाध्यरोगनाशाय मनोऽभीप्सितकर्मणे ॥ १५ ॥

अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्याय वै पुनः ।

सर्वशान्तिर्भवेत्तत्र रुद्रावृत्त्या न संशयः ॥ १६ ॥

भगवान् शिव ने पार्वती से रुद्री के पाठ का फल इस प्रकार कहा है-शिवपूजक सर्वप्रथम संकल्प कर अङ्गन्यास करे। पश्चात् शिव को पञ्चामृत से स्नान करावे और ध्यानपूर्वक जप करे। रुद्री के एक पाठ से बाल ग्रहों की शान्ति, तीन पाठ से उपसर्ग (उपद्रव) की शान्ति, पाँच पाठ से ग्रहों को शान्ति, सात पाठ से महाभय को शान्ति, नव पाठ से सर्वविध शान्ति और वाजपेय यज्ञ की फल-प्राप्ति, ग्यारह पाठ से राजा का वशीकरण और विविध विभूतियों की प्राप्ति होती है। तीन रुद्रों से कामना की सिद्धि और शत्रुओं का नाश, पाँच रुद्रों से शत्रु और स्त्री

का वशीकरण, सात रुद्रों से सुखप्राप्ति, नव रुद्रों से पुत्र-पौत्र और धन-धान्य की समृद्धि होती है। एक महारुद्र से राजभय का नाश, शत्रु का उच्चाटन, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि, अल्पमृत्यु का विनाश, आरोग्य, यश और श्रीकी प्राप्ति तथा राजा से वृद्धि प्राप्त होती है। तीन महारुद्रों से असाध्य कार्य की सिद्धि, पाँच महारुद्रों से राज्यकामना की सिद्धि, सात महारुद्रों से सप्तलोक की सिद्धि, नव महारुद्रों से पुनर्जन्म की निवृत्ति होती है। एक अतिरुद्र से देवत्व की प्राप्ति, डाकिनी आदि से भय की निवृत्ति, तीन अतिरुद्र से भूतादिकों से भय की निवृत्ति, पाँच अतिरुद्र से ग्रहदोष की शान्ति, सात अतिरुद्र से ज्वर, अतिसार, वात, पित्त, कफ आदि दोषों की शान्ति, नव अतिरुद्र से सर्वार्थसिद्धि, अल्पमृत्यु का विनाश और आरोग्य की प्राप्ति होती है। ग्यारह अतिरुद्र से समस्त प्रकार की शान्ति होती है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

रुद्राभिषेक के लिये विविध द्रव्य और उनका विविध फल

लिख्यते च मया द्रव्यमभिषेकात्मकं परम् ।

जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः ॥ १ ॥

दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च ।

मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा ॥ २ ॥

पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।

वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याऽङ्गना ॥ ३ ॥

सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।

ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया ॥ ४ ॥

धृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम् ।

तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः ॥ ५ ॥

प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम् ।

केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः ॥ ६ ॥

शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत् ।

श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च ॥ ७ ॥
 सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह ।
 मधुना यक्षमराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात् ॥ ८ ॥
 पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा ।
 जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै ॥ ९ ॥
 पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेच्छिवं तथा ।
 महालिङ्गाभिषेकेण सुप्रीतः शङ्करो मुदा ॥ १० ॥
 कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम् ।

मैं भगवान् शङ्कर के अभिषेकात्मक श्रेष्ठ द्रव्यों को लिखता हूँ।
 जल से वर्षा, कुशा के जल से शान्ति, दही से पशु-प्राप्ति, ईख के रस
 से लक्ष्मी-प्राप्ति, मधु और घी से धन, तीर्थ से मोक्ष, दुग्ध से पुत्र-प्राप्ति
 अथवा वन्ध्या, काकवन्ध्या मृतवत्सा स्त्री को दुग्ध से शीघ्र पुत्र-प्राप्ति,
 जल की धारा से ज्वर-शान्ति, एक हजार मन्त्रों के सहित घृत की धारा
 से वंश-विस्तार, केवल दुग्ध की धारा से प्रमेह रोग की शान्ति और

मनोवाञ्छा की पूर्ति, शक्कर मिले हुए दूध से जड़-बुद्धि का निर्मल होना, सरसों के तेल से शत्रु का नाश तथा रोग का नाश और शहद से यक्ष्मरोग की शान्ति तथा पाप का क्षय होता है। पाप क्षय की इच्छा वाले को दुग्ध से, लक्ष्मी की कामना वाले को ईख (गन्ने) के रस से और पुत्रार्थी को चीनी से मिश्रित जल से भगवान् सदाशिवजी का अभिषेक करना चाहिये। महालिङ्ग का उपर्युक्त द्रव्यों से अभिषेक करने से शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होकर भक्तों की तत्तत् कामनाओं को पूर्ण करते हैं। अतः भक्तों को चाहिये कि वे यजुर्वेदविहित विधान से रुद्रों का अभिषेक करें।

पं. युवराज चरण

शिवपूजनविधिः

शिवपूजनकर्ता स्नान-सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर पवित्र स्थान में पूजन-सामग्री को अपने सम्मुख रख के कुशा आदि के पवित्र आसन पर बैठें। पश्चात् ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। इस प्रकार आचमन करके फिर तीन बार प्राणायाम करें। अनन्तर इस प्रकार विनियोग करें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिर्विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः
हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ कर पूजन-सामग्री के ऊपर और अपने ऊपर जल छिड़कें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः

पश्चात् इस प्रकार विनियोग करें-

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने
विनियोगः।

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण कर आसन पर जल छिड़कें-

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्

पश्चात् अपने शरीर की शुद्धि के लिये सर्वप्रायश्चित्त करें। सर्वप्रायश्चित्त का सङ्कल्प इस प्रकार है।

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम्) करिष्यमाणरुद्राभिषेककर्मणि अधिकारप्राप्त्यर्थं कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे इस प्रकार सङ्कल्प कर तण्डुलों से परिपूर्ण ताम्र के पात्र में कुंकुम से अष्टदल पद्म का निर्माण कर उसके ऊपर गोमयमयी गौरी

और फलमय गणेश को स्थापित कर अपने हाथ में अक्षत एवं पूष्प लेकर गणेश जी का ध्यान कर ॐ आनो भद्राः० इत्यादि मङ्गलमन्त्रों को पढ़ें। अनन्तर हाथ में जल और अक्षत लेकर संझल्य करें।

संझल्य:- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्माणोऽहि द्वितीयपराद्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यातवर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे षष्ठ्यब्दानां मध्ये अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अमुकवर्मा, अमुकगुप्तः) सपत्नीकोऽहं ममाऽऽत्मनः कायिक-वाचिक-मानसिक-

११

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्व्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टुं
यज्ञठ० समिमं दधातु । विश्वे देवास ऽद्भु मा दयन्तामो३ प्रतिष्ठ ॥

ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥

अबोद्ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्टिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्
छन्दः शिरोन्यासे विनियोगः ।

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवा यतीमुषासम् ।
ब्रह्मा ऽइव प्रवया मुजिहानाहप्रभानवः सिस्त्रते नाकमच्छ ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः
शिखान्यासे विनियोगः ।

ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम् ।
कविर्ठ० सम्प्राजमर्तिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥

ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥

मर्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्माणि देवता विराट् छन्दः
कवचन्यासे विनियोगः

ॐ मर्माणि ते वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु

वस्ताम् । उ॒रोर्व्वरीं॑यो॒ व्वरु॑णस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानुं देवा म॑दन्तु ॥

ॐ कवचाय हुम् ॥ ४ ॥

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता
त्रिष्टुप् छन्दः नेत्रन्यासे विनियोगः ।

ॐ व्वि॒श्वत॑श्चक्षुरु॒त व्वि॒श्वतो॑मुखो व्वि॒श्वतो॑बाहुरु॒त
व्वि॒श्वत॑स्प्मात् । सं बा॒हु॒भ्यां ध॑मति॒ सम्पत॑त॒त्रैर्धा॑वा॒भूमीं ज॑नयन्देव
ऽएकं॑ ॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥

मा नस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एको रुद्रो देवता जगती
छन्दः अस्त्रन्यासे विनियोगः ।

ॐ मा न॑ स्तोके तन॑ये॒ मा न॒ ऽआयु॑षि॒ मा नो॒ गोषु॒ मा नो॒ ऽअश्ने॑षु
रीरिष॑ह । मा नो॑ व्वी॒रान् रु॑द्र भा॒मिनो॑ व्वधीर्ह॒विष्मन्त॑ह॒ सद॑मित्त्वा
हवामहे ॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

देवतान्यासः-ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकं मा न
 ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम् । मा नो व्वधीह पितरं मो त मातरं मा
 नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषह ॥

गणपतिपूजनम् - ॐ गुणानां त्वा गुणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां
 त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो
 मम । आहमजानि गर्ब्धमा त्वमजसि गर्ब्धम् ॥

इस प्रकार षोडशोपचार अथवा यथोपचार से गणेश जी का पूजन
 करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

ॐ नमो गुणेभ्यो गुणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्वातेभ्यो
 व्वातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो
 नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमह ॥

अम्बिकापूजनम् - ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति
 कश्चन । ससस्त्यश्चकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

इस प्रकार यथोपचार से अम्बिका का पूजन करके नीचे लिखी

प्रार्थना करें-

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं
गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

नन्दीश्वरपूजनम् - ॐ आशुऽशिशानो वृषभो न भीमो घनाघनऽ
क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरऽशतऽसेना
ऽअजयत्साकमिन्द्रः ।

इस प्रकार यथोपचार से नन्दीश्वर का पूजन करके नीचे लिखी
प्रार्थना करें-

ॐ प्रेतु व्वाजी कनकक्रदन्नानदद्रासभः पत्त्वा ।

भरन्नाग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा ॥

वीरभद्रपूजनम् - ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं
पश्येमाक्षभिर्बजत्राह । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ५ संस्तु नूभिर्व्यशेमहि
देवहितं च्छदायुः ॥

इस प्रकार यथोपचार से वीरभद्र का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

ॐ भद्रो नो ऽअगिराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो ऽअध्वरः
भद्रा ऽउत प्रशस्तयह ॥

स्वामिकार्तिकपूजनम्—ॐ बदक्कन्दह प्रथमं जायमान
ऽउद्यन्तसमुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू
ऽउपस्तुत्यं महिं जातं तै ऽअर्व्वन् ॥

इस प्रकार यथोपचार से स्वामिकार्तिक का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा ऽइव । तन्न ऽइन्द्रो
बृहस्पतिरदितिः शर्मं यच्छतु विश्वाहा शर्मं यच्छतु ॥

कुबेरपूजनम्—ॐ कुविदङ्ग बवमन्तो बव चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्व
व्वियूयं । इहेहैषां कुणुहि भोजनानि बे बर्हिषो नमं ऽउक्तिं बजन्ति ॥

इस प्रकार यथोपचार से कुबेर का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ व्वयउं सोम व्वते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

कीर्तिमुखपूजनम्—ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे
 स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा विभुवे
 स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सठ० सर्पाय स्वाहा चन्द्राय
 स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ॥

इस प्रकार यथोपचार से कीर्तिमुख का पूजन करके नीचे लिखी
 प्रार्थना करें—

ॐ ओजश्च मे सहश्च म ऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे व्वर्म
 च मे ऽङ्गानि च मे स्थीनि च मे परं ऽषि च मे शरीराणि च म
 ऽआयुश्च मे जरा च मे वृद्धेन कल्पन्ताम् ॥

शिव की जलहरी में यदि सर्प का आकार बना हो तो प्रथम सर्प का
 पूजन करके पश्चात् शिव का पूजन करें।

सर्प का पूजन निम्नलिखित मन्त्र से करें—

ॐ नमो ऽस्तु सर्पेभ्यो वे के च पृथिवीमनु।

वे ऽअन्तरिक्षे वे दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

पश्चात् शिव का पूजन इस प्रकार श्रद्धा-भक्ति से करें-

ध्यान-ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।

पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः साम्बशिवं ध्यायामि ।

आवाहन-ॐ नमस्ते रुद्र मन्त्र्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः ।

बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

त्रिपुरान्तकरं देवं चूडाचन्द्रं महाद्युतिम् । गजचर्मपरीधानं
शिवमावाहयाम्यहम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः । आवाहनं समर्पयामि । आवाहनार्थं
पुष्पं समर्पयामि ।

आसन- ॐ बा तै रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ।

तया नस्तन्वा शन्त मया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥

୨୭

शिवाङ्गिरित्र ताङ्कस्माहिंस्रीः पुरुषजगत् ॥

गङ्गादकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् । पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते
प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्य- ॐ शिवे नृव्वचंसात्त्वागिरि शाच्छां व्वदामसि ।

बथानृहसर्व्वमिज्जगं दयक्ष्मसुमनाऽअसत् ॥

नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे । करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं
नमोऽस्तु ते ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमन- ॐ अब्द्रयवोचदधिवक्ताप्प्रथमो दैव्योभिषक् ॥

अहीरैच्च सर्वाञ्जभयन्त्सर्वाश्च बातुधात्र्योऽधराचीह परांसुव ॥

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम् । आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा
परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

मधुपर्क- ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठं रूपमन्नाद्यम् । तेनाहं मधुनो

मध्व्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मध्व्योऽन्नादोऽसानि ॥

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्मसमन्वितम् । मधुपर्कं गृहाण त्वं प्रसन्नो
भव शङ्कर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि ।

स्नान-ॐ असौ बस्ताम्प्रोऽअरुणऽउत बभ्रुऽ सुमङ्गलः ॥

बेचैनं रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताऽ सहस्रशोऽवैषाऽ हेडऽ

ईमहे ॥

गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः । स्नापितोऽसि मया देव
ततः शांतिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

पयःस्नान-ॐ पयः पृथिव्यां पयः ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो
धाह । पयस्वतीह प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावकं यज्ञहेतुश्च पयः
स्नानार्थमर्पितम् ।

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि । पयः
स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

दधिस्नान-ॐ दधि॒क्राव्णो॑ ऽअकारिषं जि॒ष्णोरश्व॑स्य व्वा॒जिनं॑ ।
सुर॒भि॒नो॒ मुखा॑ कर॒त्प्रण॑ ऽआयू॑ंषि तारिषत् ॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि । दधिस्नानान्ते
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

घृतस्नानं-ॐ घृतं मि॒मिक्षे॑ घृतम॑स्य बो॒निर्घृ॑ते श्रि॒तो घृत॑म्बस्य धामं ।
अ॒नुष्व॒धमा॑ वह मा॒दय॑स्व स्वाहा॑कृतं व्वृषभ व्वक्षि ह॒व्यम् ॥
नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

मधुस्नान-ॐ मधुच्चाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवह ।
 माद्ध्वीर्नह सन्त्वोषधीह ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवर्ठ०
 रजः । मधु द्यौरस्तु नह पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमाँरऽ अस्तु
 सूर्षः । माद्ध्वीर्गावो भवन्तु नह ॥

दिव्यैः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम् । मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं
 प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते
 शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

शर्करास्नान-ॐ अ॒पा ० रस॒मुद्वय॑स॒र्ठ० सूर्षे॑ सन्त॒र्ठ० स॒मा
 हि॒तम् । अ॒पा० रस॑स्य॒बोर॑स॒स्तं वो॑ गृह्णाम्युत्त॒ममु॑पया॒म गृ॑हीतो ऽसीन्द्राय
 त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते बो॒निरिन्द्रा॑यत्त्वा जुष्टं तमम् ॥

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं
 प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि ।

शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नान-ॐ पञ्च नद्युः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसह ।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि धृतं मधु । शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नान-ॐ शुद्धवाल्हः सर्वशुद्धवालो मणिवाल्हस्त
ऽआंश्चिनाः । श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णार्ण
वामा ऽअंवल्लिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा । सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

महाभिषेकस्नान-पश्चात् शिव की मूर्ति पर ॐ नमस्ते० (१-१६)

इस रुद्रसूक्त से जलधारा द्वारा अभिषेक करें।

गन्धोदकस्नान-ॐ त्वांगन्धर्व्वा ऽअखनं स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।

त्वामौषधे सोमो राजां विद्वान्यक्षमादमुच्यत ॥

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्। चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।
गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। अचमनीयं जलं समर्पयामि।

उद्वर्तनस्नान-ॐ अ॒र्ठ॒० शु॒नां ते अ॒र्ठ॒० शु॒ऽ पृ॒च्छ्यतां प॒रु॒षा प॒रुः॑ ।

गन्धस्ते सोममवतुमदायरसो ऽअच्युतः ॥

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्। उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि।
उद्वर्तनस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

विजयास्नान-ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्ल्योबाणावाँ २ ॥

उ॒त ॥ अने॑शन्नस्य॒बा ऽइष॑व॒ऽआभुर॑स्यनिषङ्ग॒धिः ॥

शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभावसमन्वितम् ।

विजयाख्यं च स्नानार्थं भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः विजयां समर्पयामि ।

विजयासमर्पणान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

वस्त्र-ॐ असौ॑ बा॒ऽवस॑र्पति॒नील॑ग्रीवो॒ व्विलो॑हितः ॥

उ॒तैनं॑ङ्गोपा॒ऽअ॒हं॒श्र॒न्न॒हं॒श्र॒नुद॑हा॒र्ष्यः॒ सदृ॑ष्टोमृ॒ड या॑तिनः ॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम् । देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं
प्रयच्छ मे ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीत-ॐ नमो॑ऽस्तुनील॑ग्रीवायसहस्रा॒ क्षाय॑मीदुषे ॥

अथो॒बेऽअ॑स्य॒सत्त्वा॑नो॒ऽहन्ते॑ ब॒भ्यो॑ऽकर॒न्नमः॑ ॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं मया दत्तं गृहाण
परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि । यज्ञोपवीतान्ते
आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

उपवस्त्र—ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व्वरूथ मा सदस्वः ।

व्वासो ऽअग्ने विश्वरूप० संव्ययस्व विभावसो ॥

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद
परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि ।

गन्ध (चन्दन)— ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्वन्योर्ज्याम् ॥

बाश्च्यतेहस्तऽ इषवः पराता भगवोव्वप ॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं
प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धं समर्पयामि ।

भस्म—ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्रे । स० सृज्य-
मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदह ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
सर्वपापहर भस्म दिव्यज्योतिस्समप्रभम् । सर्वक्षेमकर पुण्य गृहाण

परमेश्वर

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः भस्म समर्पयामि ।

अक्षत—ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत ।

अस्तोषतस्वभानवो विष्प्रा नविष्पृया मती बोजान्विद्भते हरीं ॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या
गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पमाला—ॐ ओषधीं प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीं प्रसूवरीं ।

अश्वाऽइव सजित्त्वंरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।

मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पमालां समर्पयामि ।

बिल्वपत्र—ॐ नमो बिल्विन्मने चकवचिने च नमो वल्मिर्णिणे

चव्वरूथिनेचनमः ॥ श्रुतायचश्रुत सेनायचनमोदुन्दुब्यायचाह
नत्र्यायचनमोधृष्णवे ॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम् । त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ १ ॥
काशीवासनिवासी च कालभैरवदर्शनम् । कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ २ ॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम् । अघोरपापसंकाशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ ३ ॥
अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशङ्करम् । कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ ४ ॥
गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वरः । सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रियः ॥ ५ ॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः । तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ॥ ६ ॥
श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शङ्करस्य सदा प्रियम् । पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वरम् ॥ ७ ॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च कोमलैश्चातिसुन्दरैः । त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ८ ॥
अमृतोद्भवश्रीवृक्षं शङ्करस्य सदा प्रियम् । तत्ते शम्भो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर ॥ ९ ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकदश बिल्वपत्राणि समर्पयामि ।

दूर्वाङ्कुर—ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषं परुषस्पर्शं ।

एवा नो दूर्वोऽप्यतनु सहस्रेण शतेन च ॥

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् । आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण
परमेश्वर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ।

शमीपत्र—ॐ अग्नेस्तनूरसि व्याचो व्विसर्जनं देववीतये त्वा
गृह्णामि बृहद्ग्रावसि व्वानस्पत्यः स ऽइदं देवेभ्यो हविः शमीष्व
सुशमिं शमीष्व । हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि ॥

अमङ्गलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च ।

दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शमीपत्राणि समर्पयामि ।

तुलसी-मञ्जरी—ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः ।

मा द्यावापृथिवी ऽअभिषोचीर्मन्तरिक्षं मा व्वनस्पतीन् ॥

मिलत्परिमलामोदभृङ्गसङ्गीतसंस्तुताम् । तुलसीमञ्जरीं मञ्जु अञ्जसा
स्वीकुरु प्रभो ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः तुलसीमंजरीं समर्पयामि ।

आभूषण—ॐ शुभं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप
तन्तमिद्धतंवज्रैणतन्तमिद्धतम् । दूरे चत्तायच्छत्सद् गहनं यदिनक्षत् ॥

अस्माक ६ शत्रून्परिशूरं विश्वतोदुर्मर्षादर्षीष्टं विश्वतः ।

भूभुवः स्वः सुप्रजाऽप्रजाभिः स्यामसुवीरावीरैऽसुपोषा हपोषैः
वज्र-माणिक्य-वैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् । पुष्परगसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आभूषणं समर्पयामि ।

नानापरिमल—ॐ अहिरिव भोगैऽपर्व्येति बाहुं ज्यायां हेति
परिबाधमानं । हस्तघ्नो विश्वा व्युनानि विद्वान् पुमान् पुमांश्च सं
परिपातु विश्वतः ॥

अबीरं च गुलालं च हस्त्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

सिन्दूर—ॐ सिन्धोरिव प्रादुर्ध्वने शूघनासो व्वातंप्रमियं
पतयन्ति ब्रह्माः । घृतस्य धारां ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठं
भिन्दन्नृमिभिः पिन्वमानं ॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यसुखवर्द्धनम् । शुभदं चैव माङ्गल्यं सिन्दूरं
प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूर समर्पयामि ।

सुगन्धिद्रव्य—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम् । गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं
स्वीकुरु शङ्कर ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि ।

अङ्गपूजा—गन्ध, अक्षत और पुष्प आदि से भगवान शिव की इस
प्रकार अङ्गपूजा करें—

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि ॥ १ ॥

ॐ शङ्कराय नमः जङ्घे पूजयामि ॥ २ ॥

ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ॥ ३ ॥

ॐ शम्भवे नमः कटी पूजयामि ॥ ४ ॥

ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ॥ ५ ॥

ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ६ ॥

ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि ॥ ७ ॥

ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि ॥ ८ ॥

ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि ॥ ९ ॥

ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि ॥ १० ॥

ॐ शिवत्मने नमः मुखं पूजयामि ॥ ११ ॥

ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि ॥ १२ ॥

ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि ॥ १३ ॥

ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ १४ ॥

आवरणपूजा—ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥
 ॐ शिवाय नमः ॥३॥ ॐ विरूपाय नमः ॥४॥ ॐ विश्वरूपाय
 नमः ॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥६॥ ॐ भैरवाय नमः ॥७॥ ॐ
 कपर्दिने नमः ॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय नमः
 ॥१०॥ ॐ महेशाय नमः ॥११॥

एकादशशक्तिपूजा—ॐ उमायै नमः ॥१॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः

॥२॥ ॐ पार्वत्यै नमः ॥३॥ ॐ गौर्यै नमः ॥४॥ ॐ काल्यै नमः
॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः ॥६॥ ॐ कोट्यै नमः ॥७॥ ॐ
विश्वधारिण्यै नमः ॥८॥ ॐ ह्यै नमः ॥९॥ ॐ ह्रीं नमः ॥१०॥ ॐ
गङ्गादेव्यै नमः ॥११॥

गणपूजा—ॐ गणपतये नमः ॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः ॥२॥
ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥४॥ ॐ भैरवाय नमः
॥५॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥६॥ ॐ ईश्वराय नमः ॥७॥ ॐ
दण्डपाणये नमः ॥८॥ ॐ नन्दिने नमः ॥९॥ ॐ महाकालाय नमः
॥१०॥

अष्टमूर्तिपूजा—ॐ क्षितिमूर्तये नमः ॥१॥ ॐ शर्वाय जलमूर्तये
नमः ॥२॥ ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ॥३॥ ॐ उग्राय वायुमूर्तये
नमः ॥४॥ ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॥५॥ ॐ पशुपतये
यजमानमूर्तये नमः ॥६॥ ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॥७॥ ॐ
ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥८॥

एकादश रुद्रपूजा—ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः
 ॥२॥ ॐ शर्वाय नमः ॥३॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥४॥ ॐ
 विश्वरूपिणे नमः ॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥६॥ ॐ कपर्दिने नमः
 ॥७॥ ॐ भैरवाय नमः ॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय
 नमः ॥१०॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥११॥

अष्टोत्तरशतशिवनाम पूजा (शिव के १०८ नामों से पुष्प, अक्षत
 आदि से शिव-पूजन करें)—

ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिरनुष्टुप् छन्दः
 श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये
 अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः ।

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
 विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम् ।
 गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यं
 वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

ॐ शिवाय नमः ॥१॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥२॥ ॐ शम्भवे नमः
 ॥३॥ ॐ पिनाकिने नमः ॥४॥ ॐ शशिशेखराय नमः ॥५॥ ॐ
 वामदेवाय नमः ॥६॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः
 ॥८॥ ॐ नीललोहिताय नमः ॥९॥ ॐ शङ्कराय नमः ॥१०॥ ॐ
 शूलपाणये नमः ॥११॥ ॐ खट्वाङ्गिने नमः ॥१२॥ ॐ विष्णुवल्लभाय
 नमः ॥१३॥ ॐ शिपिविष्टाय नमः ॥१४॥ ॐ अम्बिकानाथाय नमः
 ॥१५॥ ॐ श्रीकण्ठाय नमः ॥१६॥ ॐ भक्तवत्सलाय नमः ॥१७॥
 ॐ भवाय नमः ॥१८॥ ॐ शर्वाय नमः ॥१९॥ ॐ त्रिलोकीशाय नमः
 ॥२०॥ ॐ शितिकण्ठाय नमः ॥२१॥ ॐ शिवाप्रियाय नमः ॥२२॥
 ॐ उग्राय नमः ॥२३॥ ॐ कपालिने नमः ॥२४॥ ॐ कामारये नमः
 ॥२५॥ ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः ॥२६॥ ॐ गङ्गाधराय नमः ॥२७॥
 ॐ ललाटाक्षाय नमः ॥२८॥ ॐ कालकालाय नमः ॥२९॥ ॐ
 कृपानिधये नमः ॥३०॥ ॐ भीमाय नमः ॥३१॥ ॐ परशुहस्ताय नमः
 ॥३२॥ ॐ मृगपाणये नमः ॥३३॥ ॐ जटाधराय नमः ॥३४॥ ॐ

कैलासवासिने नमः ॥३५॥ ॐ कवचिने नमः ॥३६॥ ॐ कठोराय
 नमः ॥३७॥ ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ॥३८॥ ॐ वृषाङ्गाय नमः ॥३९॥
 ॐ वृषभारूढाय नमः ॥४०॥ ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः ॥४१॥
 ॐ सामप्रियाय नमः ॥४२॥ ॐ स्वरमयाय नमः ॥४३॥ ॐ त्रिमूर्तये
 नमः ॥४४॥ ॐ अश्विनीश्वराय नमः ॥४५॥ ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥४६॥
 ॐ परमात्मने नमः ॥४७॥ ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः ॥४८॥ ॐ
 हविषे नमः ॥४९॥ ॐ यज्ञमयाय नमः ॥५०॥ ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
 ॥५१॥ ॐ सदाशिवाय नमः ॥५२॥ ॐ विश्वेश्वराय नमः ॥५३॥ ॐ
 वीरभद्राय नमः ॥५४॥ ॐ गणनाथाय नमः ॥५५॥ ॐ प्रजापतये नमः
 ॥५६॥ ॐ हिरण्यरेतसे नमः ॥५७॥ ॐ दुर्द्धर्चाय नमः ॥५८॥ ॐ
 गिरीशाय नमः ॥५९॥ ॐ गिरिशाय नमः ॥६०॥ ॐ अनघाय नमः
 ॥६१॥ ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः ॥६२॥ ॐ भर्गाय नमः ॥६३॥ ॐ
 गिरिधन्वने नमः ॥६४॥ ॐ गिरिप्रियाय नमः ॥६५॥ ॐ अष्टमूर्तये
 नमः ॥६६॥ ॐ अनेकात्मने नमः ॥६७॥ ॐ सात्त्विकाय नमः ॥६८॥

ॐ शुभाविग्रहाय नमः ॥६९॥ ॐ शाश्वताय नमः ॥७०॥ ॐ खण्डपरशवे
 नमः ॥७१॥ ॐ अजाय नमः ॥७२॥ ॐ पाशविमोचाय नमः ॥७३॥
 ॐ कृत्तिवाससे नमः ॥७४॥ ॐ पुरारातये नमः ॥७५॥ ॐ भगवते
 नमः ॥७६॥ ॐ प्रथमाधिपाय नमः ॥७७॥ ॐ मृत्युञ्जयाय नमः ॥७८॥
 ॐ सूक्ष्मतनवे नमः ॥७९॥ ॐ जगद्व्यापिने नमः ॥८०॥ ॐ जगद्गुरवे
 नमः ॥८१॥ ॐ व्योमकेशाय नमः ॥८२॥ ॐ महासेनाय नमः ॥८३॥
 ॐ जनकाय नमः ॥८४॥ ॐ चारुविक्रमाय नमः ॥८५॥ ॐ रुद्राय
 नमः ॥८६॥ ॐ भूतपतये नमः ॥८७॥ ॐ स्थाणवे नमः ॥८८॥ ॐ
 अहिर्बुध्न्याय नमः ॥८९॥ ॐ दिगम्बराय नमः ॥९०॥ ॐ मृडाय नमः
 ॥९१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥९२॥ ॐ देवाय नमः ॥९३॥ ॐ महादेवाय
 नमः ॥९४॥ ॐ अव्ययाय नमः ॥९५॥ ॐ हरये नमः ॥९६॥ ॐ
 पुष्पदन्तभिदे नमः ॥९७॥ ॐ भगनेत्रभिदे नमः ॥९८॥ ॐ अपवर्गप्रदाय
 नमः ॥९९॥ ॐ अव्यग्राय नमः ॥१००॥ ॐ अव्यक्ताय नमः ॥१०१॥
 ॐ अनन्ताय नमः ॥१०२॥ ॐ दक्षाध्वरहराय नमः ॥१०३॥ ॐ

३९

अथ रुद्राभिषेकादिविधिः

ब्राह्मणवरण—शिवपूजन करने के बाद शिवपूजनकर्ता ब्राह्मणों का वरण करें। वरण के लिये शिवपूजक सर्वप्रथम ब्राह्मणों का पाद-प्रक्षालन करें। पश्चात् ब्राह्मणों के मस्तक में तिलक लगावें, फिर चावल लगावें। पश्चात् उनको पुष्पमाला पहनावें। अनन्तर अपने दाहिने हाथ में वरण की सामग्री अथवा वरण-सामग्री के निमित्त द्रव्य लेकर इस प्रकार संकल्प करे—

‘अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम् अमुकगुप्तोऽहम्) सङ्कल्पिते रुद्राभिषेककर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः पाठकरणार्थममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे’ अथवा—‘अमुकामुकगोत्रात्रानाशर्माब्राह्मणान् युष्मान् वृणे’।

एक ब्राह्मण हो तो ‘वृतोऽस्मि’ कहें और यदि अधिक ब्राह्मण हों तो ‘वृताः स्मः’ इस प्रकार कहें। पश्चात् ‘ॐ यदा बध्नन्०’ इस मन्त्र के द्वारा ब्राह्मणों के दाहिने हाथ में रक्तसूत्र (मौली) से रक्षबन्धन करें।

ब्राह्मणों का वरण करने के बाद शिवपूजनकर्ता ब्राह्मणों से अभिषेक प्रारम्भ करने के लिये प्रार्थना करें। पश्चात् ब्राह्मणगण 'ॐ मनो जूतिः' इत्यादि छः मन्त्रों से षडङ्गन्यास कर रुद्राभिषेक प्रारम्भ करें।

उत्तरपूजन—अभिषेक करने के बाद शिवपूजनकर्ता शिवजी का षोडशोपचार से पूजन करें। पश्चात् सङ्कल्पपूर्वक ब्राह्मणों को अभिषेक की दक्षिणा और भूयसी दक्षिणा दें। अनन्तर संकल्पपूर्वक ब्राह्मणों को भोजन करावें अथवा भोजन के निमित्त द्रव्य देवें। पश्चात् शिवपूजनकर्ता 'आवाहनं न जानामि०' इत्यादि द्वारा भगवान् शिवजी से क्षमा-प्रार्थना करें।

यजमान का अभिषेक—पश्चात् ब्राह्मणगण 'ॐ द्यौः शान्तिः० । ॐ आपो हिष्ठा० । ॐ यो वः । ॐ तस्मा ऽअस्म० । ॐ वतोयतः । ॐ व्विश्वानि देव सवितः०' इत्यादि मन्त्रों के द्वारा यजमान का अभिषेक करें।

देवविसर्जन—अभिषेक होने के बाद आचार्य 'यान्तु देवगणाः सर्वे०' इत्यादि के द्वारा देवताओं का विसर्जन करें।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्षा-बन्धन—पश्चात् आचार्य 'ॐ यदा बध्नन्०' इस मन्त्र के द्वारा यजमान के दाहिने हाथ में और उनकी पत्नी के बाएँ हाथ में रक्षा-बन्धन करें।

तिलक—अनन्तर आचार्य अपने हाथ में फल और अक्षत लेकर 'ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रः०' इस मन्त्र से यजमान के मस्तक में तिलक करें। पश्चात् आचार्य 'ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्या० ॥१॥ ॐ दीर्घायुस्त ऽओषधे० ॥२॥ ॐ व्विवस्वन्नादित्यैषते० ॥३॥' इत्यादि मन्त्रों को पढ़कर यजमान को आशीर्वाद दें।

इति रुद्राभिषेकादिविधिः

शिवपूजन-सामग्री

रोली	ऋतुफल	फुटकर पुष्प
मौली	अतरकी शीशी	बिल्वपत्र
धूपबत्ती	यज्ञोपवीत	दूर्वा
केशर	गोबर	तुलसी
कपूर	गोमूत्र	धतूरे के फूल और फल
रूई	दुग्ध	मदार का पुष्प
सिन्दूर	दही	चन्दन
अवीर (गुलाल)	घृत	गङ्गाजल
बुक्का (अभ्रक)	शहद	कुशा
चावल	चीनी	नारियल
पान	छोटी इलायची	शिवजी के लिये धोती
सुपारी	लवङ्ग	शिवजी के लिये
पेड़ा	पुष्पमाला	अंगोछा

अभिषेकपात्र	लौटा (पूजनार्थ)	अंगीछा
थाली (पूजनार्थ)	रुद्राक्षमाला	यज्ञोपवीत
कटोरी (पूजनार्थ)	मिट्टी के सकोरे	कुशासन आदि
पञ्चपात्र (पूजनार्थ)	ब्राह्मणों की वरण सामग्री	ब्राह्मणों के लिये मिष्ठान
आचमनी (पूजनार्थ)	धोती	ब्राह्मणों के लिये दक्षिणा

पं. धुकराजी लाल शर्मा :- २००८

॥ श्रीः ॥

अथ शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राध्यायी

अथ प्रथमोऽध्यायः

श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिं ॐ गुणानान्त्वा
 गुणपतिं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनान्त्वा
 निधिपतिं हवामहे व्वसोमम ॥ आहमंजानिगर्भधमात्त्वमंजासि
 गर्भधम् ॥ १ ॥ गायत्री त्रिष्टुब्जगन्त्य नुष्टुप् इक्त्या सह ॥ बृहत्त्युष्णि
 हाक्कुप्सूचीभिः शम्यन्तुत्वा ॥ २ ॥ द्विपदा बाश्चतुष्पदास्त्रि
 पदा बाश्चषट्पदाः ॥ विच्छन्दा बाश्चसच्छन्दाः सूचीभिः
 शम्यन्तुत्वा ॥ ३ ॥ सहस्तोमाः सहछन्दसः आवृतः सहप्रमा
 ऽऋषयः सप्तदैव्याः ॥ पूर्वेषाम्पन्थामनुदृश्यधीराः अश्वाले

भिरेरत्थ्योनरश्मोन् ॥ ४ ॥ ॐ बजाग्रतो दूरमुदैतिदेवन्तदुसुप्सस्य
 तथैवैति ॥ दूरङ्गमज्ज्योतिषाज्ज्योतिरे कन्तन्मेमनःशिवसङ्क
 ल्पमस्तु ॥ ५ ॥ येन कर्माण्यपसोमनी षिणो बज्ञे कृण्वन्ति वि
 दथेषुधीराह ॥ बर्दपूर्व्वक्षमन्तःप्रजानान्तन्मेमनःशिवसङ्कल्प
 मस्तु ॥ ६ ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतोदृतिश्च्यबज्ज्योतिरन्तर मृतं म्रजासुं ॥
 यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मक्रियतेतन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु
 ॥ ७ ॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्व्वम् ॥
 येन बज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मे मनःशिवसङ्कल्प मस्तु ॥ ८ ॥
 यस्मिन्वृचः सामबजूंषिबस्मिन् अतिष्ठितारथनाभा विवारा ॥
 यस्मिंश्चिच्चतसर्व्वमोतं म्रजानान्तन्मेमनःशिवसङ्कल्प मस्तु ॥ ९ ॥
 सुषारथिरश्वानिव बन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिनऽइव ॥
 हत्प्रतिष्ठं बर्दजिरञ्जविष्ठन्तन्मे मनःशिवसङ्कल्प मस्तु ॥ १० ॥

इति रुद्र प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

हरिं ÷ ॐ सहस्रशीर्षापुरुषं सहस्राक्षं सहस्रपात् ॥
 सभूमिं सर्वतम्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषं एवेदं
 सर्वं ऋषद्भूतं ऋषच्च भ्रातृव्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्येशानो
 बदर्शनातिरोहति ॥ २ ॥ एतावानस्यमहिमातो ज्येष्ठांश्च पुरुषं ॥
 पादोऽस्य विश्वभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादु
 द्ध्वं उदैत्पुरुषं पादोऽस्येहा भवत्पुनः ॥ ततो विष्वङ् व्य
 क्रामत्साशनान् शनेऽभि ॥ ४ ॥ ततो विराड् जायत वि
 राजोऽधि पुरुषं ॥ स जातोऽत्यरिच्यत पश्चाद्भू
 मिमथो पुरः ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वं हुतं सम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥

प॒शूँस्ताँश्च॑व॒क्त्रे॒व्याय॑व्या॒नार॑ण॒याग्राम्या॑ श॒च्च॒बे ॥ ६ ॥
 तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व्व॑हु॒तऽऋच॑ह॒ सामा॑निज॒ज्ञिरे ॥ छन्दा॑ऽसिज॒ज्ञिरे
 तस्मा॑द्य॒जुस्त॑ स्मा॒दजा॑यत ॥ ७ ॥ तस्मा॑द॒श्वाऽअ॑जायन्त॒
 बेके॑चो॒भया॑द॒तह॑ । गावो॑हज॒ज्ञिरे॒तस्मा॑त्तस्मा॑ ज्ञा॒ताऽअ॑जावयः
 ॥ ८ ॥ तं॒ब॒ज॒म्ब॒र्हिषि॑ प॒प्रौक्ष॑न्पुरु॒षञ्जा॑तम॒गृ॒तऽ ॥ तेन॑दे॒वाऽ
 अ॑यजन्त सा॒द्ध्याऽऋ॒षय॑श्च॒बे ॥ ९ ॥ ब॒त्पुरु॑षं व॒यद॑धुह॒
 कति॑धाव्य॒कल॑प्पयन् ॥ मुख॑ङ्किम॒स्यासी॑त्कि॒म्बाहू॑किमू॒रूपा॑दा
 ऽउ॒च्येते ॥ १० ॥ ब्रा॒ह्म॒णोऽस्य॑मु॒खमा॑सीद्बाहू रा॒ज॒न्यः॒कृतऽ ॥
 ऊ॒रूतद॑स्य॒बद्द्वै॒शयः॑ प॒ञ्चा॒शू॒द्रोऽअ॑जायत ॥ ११ ॥
 च॒न्द्रमा॑मन॒सोजा॑ तश्च॒क्षोः॒सू॒र्बोऽअ॑जायत ॥ श्रो॒त्राद॑द्वायुश्च॒
 प्रा॒णश्च॑मु॒खाद॑ग्रि॒रजा॑यत ॥ १२ ॥ ना॒भ्याऽआ॑सीद॒न्तरि॑क्षः
 शी॒ष्णो॒द्यौऽसम॑वर्त्तत ॥ प॒ञ्चा॒म्भूमि॑र्दि॒शः श्रो॒त्रात्तथा॑लो॒काँ ॥

ॐ अंकल्पयन् ॥ १३ ॥ बत्पुरुषेण हविषा देवा ब्रह्ममतञ्चत ॥
 व्वसन्तो ऽस्यासी दाज्यंङ्ग्रीष्म ऽइद्धमं शरद्धविः ॥ १४ ॥
 सप्तास्यां सन्नरिधयस्त्रिः सप्समिधः कृताः ॥ देवा ब्रह्मन्तञ्चाना
 ऽअबद्धन्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥ ब्रह्मेन ब्रह्मयजन्त देवास्तानि
 धर्माणि प्रथमाभ्यासन् ॥ तेह नाकं ममहिमानं सचन्त ब्रह्मपूर्वं
 सादध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥ अद्भ्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाच्च
 विष्णुश्च कर्मणः समवर्त्तताग्रे ॥ तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमे
 तितन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥ १७ ॥ वेदाहमेतम्पुरुष
 म्महान्तमादित्यवर्णन्ति मसह परस्तात् ॥ तमेव विदित्वातिमृत्यु
 मेति नात्र्यः पन्था विद्यते ऽयं नाय ॥ १८ ॥ प्रजापतिश्चरति
 गर्भे ऽअन्तरजायमानो बहुधा विजायते ॥ तस्य बोनिम्परिपश्यन्ति
 धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विष्वा ॥ १९ ॥ बोदेवेभ्यः

ऽआतपतिषोदेवानाम्पुरोहितः ॥ पूर्वो षोदेवेभ्योजातो नमो
 रुचायब्राह्मणे ॥ २० ॥ स्वम्ब्राह्मज्ञनयन्तो देवाऽअग्रेतदब्धुवन् ॥
 बस्त्वैवंब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे ॥ २१ ॥ श्रीश्च्यते
 लक्ष्मीश्च्यपत्कन्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥
 इष्णान्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण ॥ २२ ॥

इति रुद्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

हरिः ॐ आशुऽशिशानोवृषभोनभीमोघनाघनऽक्षोभण
 श्चार्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरऽशतऽसेनाऽ
 अजयत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥ सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना बुत्कारेण
 दुश्च्यवनेन धृष्णुना ॥ तदिन्द्रेण जयतत्सहदध्वं बभूधो

नरऽइषुहस्तेनवृष्णा ॥ २ ॥ सऽइषुहस्तेऽसनिषाङ्गिभिर्वशीसः
 स्त्रष्टासयुधऽइन्द्रोऽगुणेन ॥ सऽसृष्टजित्सोमपाबाहुशब्दयु
 ग्रधन्वाप्प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥ बृहस्पतेपरिदीयारथेनर
 क्षोहामित्रा ॥ २ ॥ अ॒प॒बा॒ध॒मा॒नः ॥ प्र॒भ॒ञ्ज॒न्त्से॒नाः प्र॒मृ॒णो॒बु॒धा
 जय॑न्नस्माकमे॒द्व्यवि॑तारथानाम् ॥ ४ ॥ ब॒ल॒वि॒ज्ञाय॑स्थवि॒रः
 प्र॒वी॒रः सह॑स्वान्वाजीसहमानऽउग्रः ॥ अ॒भि॒वी॒रोऽअ॒भिस॑त्त्वा
 सहो॒जाजै॑त्रमिन्द्ररथमातिष्ठ॒गो॒वित् ॥ ५ ॥ गो॒त्र॒भि॒द॑ङ्गो
 वि॒दं॒व्वज्र॑बाहु॒ञ्जय॑न्तमज्जमप्रमृणन्तमोजसा ॥ इ॒म॒स॑जाताऽ
 अनु॑वीर यद॒ध्वमिन्द्र॑सखायोऽअनु॒स॒रं॒भद॑ध्वम् ॥ ६ ॥
 अ॒भि॒गो॒त्राणि॑ सह॑सागाहमानोदयो॒व्वी॒रः श॒तम॑न्युरिन्द्रः ॥
 दु॒श्च॒व्य॒व॒नः पृ॑तनाषाडं यु॒द्ध्योऽस्मा॑क॒से॒नाऽअ॒वतु॑प्रयुत्सु ॥ ७ ॥
 इन्द्र॑ऽआसान्ने॒ताबृ॑हस्पति॒र्दक्षि॑णाब॒ज्ञः पुर॑ऽए॒तुसो॑मः ॥

दे॒व॒से॒ना॒ना॒म॒भि॒भ॒ञ्ज॒ती॒ना॒ञ्ज॒य॒न्ती॒ना॒म्मु॒रु॒तो॒ब॒न्त्व॒ग्ग॒म् ॥ ८ ॥
 इन्द्र॑स्य॒व्वृ॒ष्णो॒ व्वरु॑णस्य॒राज्ञ॑ऽआदि॒त्या-ना॑म्मु॒रु॒तां
 शब्द॑ऽउ॒ग्रम् ॥ म॒हाम॑न॒साम्भु॒वन॒च्य॒वाना॑ङ्घ्रो॒षो॒दे॒वाना॑ञ्ज॒यता॑
 मुद॑स्थात् ॥ ९ ॥ उद्ध॑र्षयमघव॒न्नायु॑धा॒न्युत्स॑त्त्वं ना॒म्मा॒म॒का-
 ना॒म्मना॑ऽसि ॥ उद्ध॑त्रहन्वा॒जिना॑व्वा॒जि-ना॑न्युद॒द्रथा॑ना॒ञ्जय॑
 तां॒ब॒न्तु॒घोषा॑ह ॥ १० ॥ अ॒स्माक॑ मिन्द्र॒हं॒ समृ॑तेषु॒ध्वजे॑
 ष्व॒स्माकं॒॑बाऽइष॑व॒स्ताज॑यन्तु ॥ अ॒स्माकं॑व्वा॒राऽउ॒त्तरे॑
 भव॑न्त्व॒स्माँ॒ऽउ॒दे॒वाऽअ॒वता॑हवेषु ॥ ११ ॥ अ॒मीषा॑ञ्चित्तम्प्रति
 लो॒भय॑न्ती॒गृहा॑णाङ्गा॒न्यप्वे॒ परे॑हि ॥ अ॒भिप्रे॑हि॒निर्द॑ह॒हत्सु॑शो॒कैर॑न्धे॒ना
 मि॒त्रा॒स्तम॑सा॒सच॑न्ताम् ॥ १२ ॥ अ॒व॑सृष्ट्वा॒परा॑प॒त॒शर॑व्ये
 ब्र॒ह्म॑स॒ह॒शिते॑ ॥ गच्छा॒मित्रा॑न्प्र॒पद्य॑स्व॒मामी॑षाङ्क॒ञ्चनो॑च्छि॒षहं॑
 ॥ १३ ॥ प्रे॒ता ज॑य॒तान॑रऽइन्द्रो॑व॒हं॒ शर्म॑बच्छतु ॥ उ॒ग्राव॑ऽसन्तु

बाहवोनाधृष्यावथासथ ॥ १४ ॥ असोवासेना मरुतह परेषामभ्यै
तिनऽओजसास्पदद्धमाना ॥ ताङ्गूहततमसापव्रतेनबथामीऽअन्यो
ऽअन्यन्नजानन् ॥ १५ ॥ यत्रबाणाऽसम्पतन्ति कुमाराव्विशिखाऽ
इव ॥ तन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिरदितिह शर्ममबच्छतुव्विश्वा
हाशर्ममबच्छतु ॥ १६ ॥ मर्माणितेव्वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा
राजामृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वा
नुदेवामदन्तु ॥ १७ ॥

इति रुद्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

हरिः ॐ व्विब्भ्राड्बृहत्पिबतुसोम्यम्मद्ध्वायुर्द्धधद्यज्ञपता
वविहुतम् ॥ व्वातजूतोषोऽअभिरक्षतित्मनाप्प्रजाऽपुपोषपुस्धाव्वि
राजति ॥ १ ॥ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्ति वेत्तवः ॥ दूरोव्विश्वाय

सूर्षम् ॥ २ ॥ बेनापावकचक्षसाभुर ण्यन्तञ्ज नां ॥ २ ॥ ५ अनु ॥
 त्वं वरुण पश्यसि ॥ ३ ॥ दैव्यावदध्वर्षूऽआगतं रथेन
 सूर्षत्वचा ॥ मदध्वाबज्जडसमञ्जाथे ॥ तम्प्रत्कथाऽयं वेनश्चि
 त्रन्देवानाम् ॥ ४ ॥ तम्प्रत्कथापूर्वथाविश्वथेमथाज्येषुता
 तिम्वर्हिषदंस्वर्विदम् ॥ प्रतीचीनं वृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्त
 मनुयासुवर्द्धसे ॥ ५ ॥ अयं वेनश्च्योदयत्पृश्निगर्भाज्योतिर्जरायू
 रजसोव्विमाने ॥ इममपांसङ्गमेसूर्षस्य शिशुन्नविप्रामतिभी
 रिहन्ति ॥ ६ ॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य
 वरुणस्याग्रे ॥ ७ ॥ आप्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षं सूर्षऽ
 आत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ७ ॥ आनऽइडाभिर्विदथैसुशस्ति
 विश्वानरहसवितादेवऽएतु ॥ अपिबथाबुवानोमत्सथानो
 विश्वञ्जगदभिपित्वेमनीषा ॥ ८ ॥ ब्रह्मकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽ

अ॒भिसू॑र्ष ॥ स॒र्व्वन्तदि॑न्द्रते॒व्वशे ॥ ९ ॥ त॒रणि॑र्व्विश्वद॑र्शतो
 ज्योति॑ष्कृद॒सिसू॑र्ष ॥ व्विश्व॑माभा॒सिरोच॑नम् ॥ १० ॥ तत्सू॑र्षस्य
 दे॒व त्वन्त॑त्रम॒हि त्वम् ॥ द्याक॑त्त॒र्णेर्व्वित॑त॒ऽसञ्ज॑भार ॥
 ष॒देदयु॑क्त॒हरित॑ः स॒धस्था॑दा द॒द्रात्री॑व्वासंस्तनुते॒सिम॑स्मै ॥ ११ ॥
 तन्मि॒त्रस्य॑ व्वरु॑णस्याभि॒चक्षे॑सू॒र्षो॒रूप॑ङ्क॒णुते॑द्यो स॒पस्थे ॥
 अ॒नन्त॑म॒न्यद्दृश॑दस्य॒पाजः॑ कृ॒ष्ण म॒न्यद्भुरि॑त॒हं सम्भ॑रन्ति ॥ १२ ॥
 ब॒ण्णम॑हाँ २ ॥ ऽअ॑सि॒सू॒र्ष ब॒डादि॑त्य म॒हाँ २ ॥ ऽअ॑सि ॥
 म॒हस्ते॑स॒तोम॑हि॒माप॑नस्यते॒द्धादे॑वम॒हाँ २ ॥ ऽअ॑सि ॥ १३ ॥
 ब॒ट्सू॑र्ष॒श्रव॑साम॒हाँ २ ॥ ऽअ॑सि॒स॒त्रादे॑वम॒हाँ २ ॥ ऽअ॑सि ॥
 म॒ह्नादे॑वाना॒म सु॑र्षः पुरोहि॑तोव्वि॒भुज्योति॑रदा॒ब्ध्यम् ॥ १४ ॥
 श्राय॑न्त॒ऽइव॑सू॒र्ष व्विश्वे॑दिन्द्र॑स्यभक्षत ॥ व्वसू॑निजा॒ते
 जन॑मान् ऽओज॑साप्प्रति॒भाग॑न्नदी॒धिम ॥ १५ ॥ अ॒द्यादे॑वाऽ

उदितासूक्ष्म-स्यनिरहसहपिपृता निरवद्यात् ॥ तन्नो मित्रो
 व्वरुणो मामहन्तामदितिहसिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौ ॥ १६ ॥
 आवृष्णो नरजसाव्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेन
 सवितारथेनादेवोवातिभुवनानि पश्यन् ॥ १७ ॥

इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

हरिः ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यां
 मुतते नमः ॥ १ ॥ बाते रुद्रशिवात नूरघोराऽपापकाशिनी ॥
 तयानस्तन्वाशन्तमयागिरि शन्ताभिचा कशीहि ॥ २ ॥ बामिषु
 झिरिशन्तहस्तैर्विभर्ष्य स्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्गुरुमाहिंसिह
 पुरुषञ्जगत् ॥ ३ ॥ शिवेनव्वचसात्त्वागिरि शाच्छाव्वदामसि ॥
 बथानहसर्व्वमिज्जगदयक्ष्मसुमनाऽअसत् ॥ ४ ॥ अब्ध्यवोच

दधिवक्ताप्रथमोदेव्योभिषक् ॥ अहोश्चसर्वाभयन्तसर्वा
 श्चचा तुधान्योऽधराचीह परासुव ॥ ५ ॥ असौबस्ताम्प्रोऽअरुणऽ
 उत बभ्रुऽसुमङ्गलः ॥ येचैनरुद्राऽअभितोदिक्षुश्चिताऽ
 सहस्रशोऽवैषाऽहेडऽईमहे ॥ ६ ॥ असौबोऽवसर्पतिनीलग्रीवो
 विलोहितः ॥ उतैनं द्रोपाऽअदृश्नदृश्नदृष्टदृष्टऽसदृष्टोमृड
 यातिनः ॥ ७ ॥ नमोऽस्तुनीलग्रीवायसहस्रा क्षायमीदुषे ॥
 अथोबेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः ॥ ८ ॥ प्रमुञ्च
 धन्वनस्त्वमु-भयोरात्वन्योर्ज्याम् ॥ बाश्चतेहस्तऽइषवऽपराता
 भगवोवप ॥ ९ ॥ विज्यन्धनुःकपर्दिनो विशल्ल्योबाणावाँ ॥
 उत ॥ अनेशन्नस्यबाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥ १० ॥
 बातेहेतिर्मीदुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ तयास्माञ्चिश्चत
 स्त्वमयक्ष्मयापरिभुज ॥ ११ ॥ परितेधन्वनोहेतिरस्माञ्चवृणक्तु

व्विश्वतः ॥ अथोषऽइं षुधिंस्तवारेऽअस्मन्निधे हितम् ॥ १२ ॥
 अवतत्त्यधनुष्वऽसहस्रा क्षशतेषुधे ॥ निशीर्षशल्यानाम्मुखा
 शिवोनः सुमनाभव ॥ १३ ॥ नमस्तऽआयुं धायानां ततायधृष्णवै ॥
 उभाब्भ्यामुततेनमो बाहुब्भ्यान्तवधञ्चने ॥ १४ ॥ मानोमहान्तं
 मुतमानोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽ उक्षितम् ॥
 मानोव्वधीह पितरस्मोतमातरस्मानः प्पि यास्तञ्चो रुद्र
 रीरिषह ॥ १५ ॥ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽ
 अश्वेषु रीरिषह ॥ मानोव्वीरान्नुद्रभामिनोव्वधीह विष्मन्तह
 सदमित्त्वाहवामहे ॥ १६ ॥ नमोहिरण्यबाहवेसेनाय्येदिशाञ्चपतये
 नमोनमोव्वक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्यह पशूनाम्पतये नमोनमः
 शष्पिञ्जरायत्त्विषीमते पथीनाम्पतये नमोनमोहरिकेशायोपवीतिने
 पुष्टानाम्पतये नमोनमोबभ्लुशाय ॥ १७ ॥ नमोबभ्लुशाय

व्याधिनेऽन्नानाम्पतयेन मोनमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतयेन मोनमो
 रुद्राया ततायिने क्षेत्राणाम्पतयेन मोनमः सूताया हन्त्यै व्वना
 नाम्पतयेन मोनमो रोहिताय ॥ १८ ॥ नमो रोहिताय स्थपतये
 व्वक्षाणाम्पतयेन मोनमो भुवन्तये व्वारिवस्कृता यौषधीनाम्पतये
 नमोनमो मन्त्रिणै व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतयेन मोनमऽउच्चैर्घो
 षाया कक्रन्दयते पत्तीनाम्पतयेन मोनमः कृत्स्नाय तया ॥ १९ ॥
 नमः कृत्स्नाय तया धावते सत्त्वं नाम्पतयेन मोनमः सहमानाय
 निव्याधिनऽआव्याधिनीनाम्पतयेन मोनमो निषङ्गिणो
 ककुभाय स्तेनानाम्पतयेन मोनमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पत
 येन मोनमो व्वञ्चते ॥ २० ॥ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पत
 येन मोनमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्कृराणाम्पतयेन मोनमः
 सूकायिभ्योजिघांसद्भ्यो मुष्णताम्पतयेन मोनमोऽसिमद्भ्यो

न'क्तञ्चरद्भ्योविवृन्तानाम्पतयेनमः ॥ २१ ॥
 नमऽउष्णीषिणैंगिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतयेनमोनमऽइषुमद्भ्यो
 धन्वायिभ्यश्च वोनमोनमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्य
 रच्चवोनमोनमऽआयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्चवोनमोनमो
 व्विसृजद्भ्यः ॥ २२ ॥ नमोव्विसृजद्भ्योव्विद्ध्यभ्य
 रच्चवोनमोनमः स्वपद्भ्योजाग्रद्भ्यश्चवोनमोनमह
 शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्
 भ्यश्चवोनमोनमः सभाभ्यः ॥ २३ ॥ नमः सभाभ्यः
 सभापतिभ्यश्चवोनमोनमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्चवो
 नमोनमऽआव्याधिनीभ्योव्विविद्ध्यन्तीभ्यश्चवोनमो
 नमऽउगणाभ्यस्तृहतीभ्यश्चवोनमोनमोगणेभ्यः ॥ २४ ॥
 नमोगणेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्वातेभ्योव्वातपति

ष्यश्चवोनमोनमोगृत्सोऽभ्योगृत्सपतिष्यश्चवोनमोनमो
 व्विस्तोष्योव्विश्व रूपेष्यश्चवोनमोनमः सेनाष्यः ॥ २५ ॥
 नमः सेनाष्यः सेनानिष्यश्चवोनमोनमोरथिष्योऽअरथेष्य
 श्चवोनमोनमः क्षत्तृष्यः सङ्गृहीतृष्यश्चवोनमोन
 मोमहद्भ्योऽअर्भकेष्यश्चवोनमः ॥ २६ ॥ नमस्तक्ष्मष्यो
 रथकरेष्यश्चवो नमोनमः कुलालेष्यः कम्मरिष्यश्चवो
 नमोनमोनिषादेष्यः पुञ्जिष्ठेष्यश्चवोनमोनमः
 श्वनिष्योमृगयुष्यश्च वोनमोनमः श्वष्यः ॥ २७ ॥ नमः
 श्वष्यः श्वपति ष्यश्चवोनमोनमोभवायचरुद्रायचनमः
 शर्वायचपशुपतयेचनमोनीलग्रीवायचशितिकण्ठा
 यचनमः कपर्दिने ॥ २८ ॥ नमः कपुर्दिने चव्युषकेशायचनमः
 सहस्राक्षायचशतधन्वनेचनमोगिरिशयाय

चशिपिविष्टायचनमोमीदुष्टमायचेषुमतेचनमो ह्रस्वाय ॥ २९ ॥
 नमो ह्रस्वायचव्वामनायचनमो बृह ते चव्वर्षीयसेचनमो
 वृद्धायचसंवृधेचनमो ऽग्रयायचप्रथमायचनमऽआशवे ॥ ३० ॥
 नमऽआशवेचाजिरायचनमः शीघ्र्यायचशीर्भ्या यचनमऽ
 ऊर्म्यायचावस्वत्र्यायचनमोनादेयायचद्वीप्यायच ॥ ३१ ॥
 नमो ज्येष्ठायचकनिष्ठायचनमः पूर्वजायचापरजाय
 चनमोमद्ध्यमायचापगल्भायचनमो जघन्यायचबुध्यायचनमः
 सोभ्याय ॥ ३२ ॥ नमः सोभ्यायचप्रतिसर्वायचनमोबा
 म्यायचक्षेम्यायचनमः श्लोक्यायचावसान्यायचनमऽ
 उर्वर्वायचखल्ल्यायचनमोव्वत्र्याय ॥ ३३ ॥ नमोव्वत्र्या
 यचकक्ष्यायचनमः श्रवायचप्रतिश्रवायचनमऽ आशुषेणायचा
 शुरथायचनमः शूरायचावभेदिनेचनमोबिलिम्मने ॥ ३४ ॥

नमो'बि'लिम्भने'चक'व'चिने'चनमो'व्व'मि'णो'चव्व'रू'थिने'चनमः
 २श्रुताय'च२श्रुतसे'नाय'चनमो'दुन्दु'ब्भ्याय'चाह'न'न्याय'चनमो'
 धृ'ष्णवे' ॥ ३५ ॥ नमो'धृ'ष्णवे'चप्प्र'मृ'शाय'चनमो'निष'ङ्गि'णो'
 चे'षु'धि'मते' चनम'स्ती'क्ष्णो'ष'वे'चायु'धिने'चनमः'स्वायु'धाय'
 चसु'धन्व'नेच ॥ ३६ ॥ नम'ह'स्रुत्या'यच'पत्थ्या'यचनम'ह'काट्ट्या'यच'
 नी'प्या'यचनम'ह'कुल्ल्या'यच'सर'स्या'यचनमो'नादे'याय'चव्वै'श'न्ताय'
 चनम'ह'कू'प्या'य ॥ ३७ ॥ नम'ह'कू'प्या'यचाव'ट्ट्या'यचनमो'व्वी'द्ध्या'
 यचात'प्या'यचनमो'मे'ग्घ्या'यच'व्वि'द्दु'त्या'यचनमो'व्व'ष्या'यचा
 व्व'ष्या'य'चनमो'व्वा'त्त्या'य ॥ ३८ ॥ नमो'व्वा'त्त्या'यच'रे'ष्म्या'
 यचनमो'व्वा'स्त'व्व्या'यच'व्वा'स्तु'पाय'चनम'ह'सो'मा'यच'रु'द्वाय'चन
 म'स्ता'म्प्राय'चारु'णाय'चनमः'श'ङ्गवे' ॥ ३९ ॥ नमः'श'ङ्गवे'च
 पशु'पत'येचनम'ऽउ'ग्गाय'च'भी'माय'चनमो'ऽग्ग्रे'व'धाय'चदू'रे'व'धा

यं च नमो ह न्त्रे च ह नीयसे च नमो वृ क्षे ष्यो हरिं के शो ष्यो
 नमस्ताराय ॥ ४० ॥ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ ४१ ॥
 नमः पाठर्षाय च वाठर्षाय च नमः पृतरणाय चोत्तरणा
 य च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्याय च फेन्याय च नमः
 सिकत्याय ॥ ४२ ॥ नमः सिकत्याय च प्रवाह्ये च नमः
 किङ्गिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमः
 इरिण्याय च प्रपथ्याय च नमो व्रज्याय ॥ ४३ ॥ नमो व्रज्याय च
 गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गोह्व्याय च नमो हृद्व्याय च निवेष्ट्या
 य च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च नमः शुष्क्याय ॥ ४४ ॥ नमः
 शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पांसव्याय च रजस्याय च नमो
 लोप्याय चोल्प्याय च नमः ऊर्व्याय च सूर्व्याय च नमः पण्णाय

॥ ४५ ॥ नमः॑ प॒ण्णाय॑ च प॒ण्णश॑दाय च नमः॑ ऽ उ॒दु॒रमा॑णाय चाभिघृ॒ते
 च॒नमः॑ ऽ आ॒खि॒द॒ते च॑ प॒प्र॒खि॒द॒ते च॒नमः॑ ऽ इ॒षु कृ॑द् भ॒भ्यो॑ ध॒नुष्कृ॑द् भ॒भ्य
 श॒च्च॒वो न॒मो न॒मो॑ व॒ह॒ कि॒रि॒के भ॒भ्यो॑ दे॒वाना॑ ह॒ ह॒द॒ये भ॒भ्यो॑ न॒मो
 वि॒चि॒त्र॒व॒त्के भ॒भ्यो॑ न॒मो वि॒क्षि॒ण॒त्के भ॒भ्यो॑ न॒मः॑ ऽ आ॒निर्ह॑
 ते भ॒भ्यः॑ ॥ ४६ ॥ द्वा॒पे ऽ अ॒न्ध॒स॒स्प॒ते द॒रि॒द्र॒नील॑ लो॒हित ॥ आ॒साम्प्र॑
 जा॒ना॒मे षा॒म्प॒शूना॑ म्मा॒भे॒र्मा॒रो ड्मो॑ च॒न॒ह॒ कि॒ञ्च॒नाम॑ मत् ॥ ४७ ॥
 इ॒मा॒रु॒द्रा॒य॒त॒व॒से क॒पर्दि॑ने॒क्ष॒य॒द्वी॒रा॒य॒प्र॒भ॒राम॑ हे॒म॒ती ॥ ब॒था॒श॒म
 स॒द॒द्वि॒प॒दे च॑तु॒ष्प॒दे वि॒श्व॑म्पु॒ष्ट॒ङ्गामे॑ ऽ अ॒स्मिन्ना॑तु॒रम् ॥ ४८ ॥
 बा॒ते॒रु॒द्र॒शि॒वा॒त॒नू॒ शि॒वा॒वि॒श्वाहा॑ भेष॒जी ॥ शि॒वा॒रु॒त॒स्य
 भेष॒जी॒त॒या॒नो॒मृ॒ड॒जी॒व॒से ॥ ४९ ॥ प॒रि॒नो॒रु॒द्र॒स्य॒हे ति॒र्वृ॒ण॒क्तु
 प॒रि॒त्वे॒ष॒स्य॒दु॒र्म॒ति॒र॒घा॒यो ॥ अ॒व॒स्ति॒थ॒राम॑ घ॒व॒द् भ॒भ्य॒स्त॒नु॒ष्व
 मी॒ड्म॒स्तो॒का॒य॒त॒न॒या॒य॒मृ॒ड ॥ ५० ॥ मी॒ढु॒ष्ट॒म॒शि॒व॒त॒म॒शि॒वो नः॑

सुमनां भव ॥ परमेवृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिं व्वसान्ऽआचर
 पिनां कम्बिब्भ्रदागहि ॥ ५१ ॥ व्विकिरिद्व्विलोहितनमस्तेऽअ
 स्तु भगवह् ॥ बास्तेसहस्रह्हेतयोऽन्यमस्मन्निव पन्तुताऽ ॥ ५२ ॥
 सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तव हेतयः ॥ तासामीशानो भगवह्
 प्राचीनामुखा कृधि ॥ ५३ ॥ असङ्ख्याता सहस्राणि बेरुद्रा
 ऽअधिभूम्याम् ॥ तेषां ऽसहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ५४ ॥
 अस्मिन्महत्पुण्ये ऽन्तरिक्षे भवाऽअधि ॥ तेषां ऽसहस्रयोजने
 ऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ५५ ॥ नीलग्रीवाह् शितिकण्ठादिवह्
 रुद्राऽउपश्रिताह् ॥ तेषां ऽसहस्रयोजने ऽवधन्वा
 नितन्मसि ॥ ५६ ॥ नीलग्रीवाह् शितिकण्ठाह् शूर्वाऽअधऽ
 क्षमाचराऽ ॥ तेषां ऽसहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ५७ ॥
 बेवृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवाव्विलोहिताह् ॥ तेषां ऽसहस्र

योजनेऽवधञ्चानितन्मसि ॥ ५८ ॥ बेभूतानामधिपतयो
 विशिखासः कपर्दिनः ॥ तेषां सहस्रयोजनेऽवध
 न्नानितन्मसि ॥ ५९ ॥ बेपथाम्पथिरक्षयऽएलबृदाऽआयुर्बुधः ॥
 तेषां सहस्रयोजनेऽवधञ्चानितन्मसि ॥ ६० ॥ बेतीर्थानिप्र
 चरन्तिसूकाहस्तानिषड्भिणः ॥ तेषां सहस्रयोजनेऽ
 वधञ्चानितन्मसि ॥ ६१ ॥ बेन्नेषुविविद्ध्यन्तिपात्रेषु
 पिबन्तोजनान् ॥ तेषां सहस्र योजनेऽवधञ्चानितन्मसि ॥ ६२ ॥
 बऽएतावन्तश्च भूयांसश्चदिशोरुद्रावितस्थिरे ॥
 तेषां सहस्रयोजनेऽवधञ्चानि तन्मसि ॥ ६३ ॥ नमोऽस्तुरुद्रे
 ष्यो बेदिविषेषां वर्षमिषवह ॥ ते ष्यो दशप्राचीर्दश
 दक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ ते ष्यो नमोऽस्तुतेनो
 ऽवन्तुतेनो मृडयन्तुते बन्दिष्यो बश्चनो द्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मह

॥ ६४ ॥ नमोऽस्तुरुद्वेभ्योषेऽन्तरिक्षेऽेषांवातऽइणवह ॥
 तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणा दशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाऽ ॥
 तेभ्योनमोऽस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेबन्दिष्मो
 बश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेददध्मह ॥ ६५ ॥ नमोऽस्तुरुद्वेभ्यो
 षेपृथिव्यांष्वेषामन्नमिषवह ॥ तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणादश
 प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाऽ ॥ तेभ्योनमोऽस्तुतेनोऽवन्तुतेनो
 मृडयन्तुतेबन्दिष्मोबश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेददध्मह ॥ ६६ ॥

इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

हरिं० ॐव्ययसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिब्रतह ॥ प्रजावन्त
 हंसचेमहि ॥ १ ॥ एषतेरुद्रभागऽसहस्वस्त्राऽम्बिकयातशुषस्व

स्वाहैषतेरुद्रभागऽआखुस्तेपशुः ॥ २ ॥ अवरुद्रमदीमह्य
 वदेवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथानोव्वस्यसस्करद्यथानुहः श्रेयसस्करद्यथानो
 व्यवसाययात् ॥ ३ ॥ भेषजमसिभेषजङ्गवेऽश्वायपुरुषाय
 भेषजम् ॥ सुखम्पेषायमेष्यै ॥ ४ ॥ त्र्यम्बकं ब्यजामहेसुगन्धि
 म्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिवबन्धनामृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥
 त्र्यम्बकं ब्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥ उर्वारुकमिवबन्धना
 दितोमुक्षीयमामृतः ॥ ५ ॥ एतत्तेरुद्राऽवसन्तेनपरोमूजवतो
 ऽतीहि ॥ अवंततधन्वापिनाकावसहकृत्तिं वासाऽअहिंसन्नहशिवो
 ऽतीहि ॥ ६ ॥ त्र्यायुषञ्जमदग्नेह कश्यपस्यत्यायुषम् ॥
 बह्वेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ॥ ७ ॥ शिवोनामासिस्वधिं
 तिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिंसीह ॥ निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यां
 यप्प्रजननायरायस्पोषायसुप्प्रजास्त्वायसुवीर्षाय ॥ ८ ॥

इति रुद्रे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

हरिः॒ ॐ उ॒ग्रश्च॑ भी॒मश्च॑ द॒ध्वान्त॑श्च॒ धुनि॑श्च ॥ सा॒स॒ह्राँ
 श॒च्चा॑भि॒युग्वा॑च॒व्वि॒क्षिप॑ह॒ स्वाहा॑ ॥ १ ॥ अ॒ग्नि॒हृद॑येना॒शनि॑ः
 हृद॒याग्रे॑ण॒ पशु॑पति॒ङ्कत्स्त्र॑हृद॒येन॑ भ॒वं ब॒ष्क्रा ॥ श॒र्व॒म्मत॑स्त्रा
 ब॒भ्यामी॑शान॒ममृ॑युना॒महा॑दे॒वम॑न्त॒र्षाव्ये॑नो॒ग्रन्दे॑वं॒व्वनि॑ष्ठुना॒
 व्वसि॑ष्ठुहनु॒ःशिङ्गी॑निको॒श्याभ्या॑म् ॥ २ ॥ उ॒ग्रँल्लो॑हि॒तेन॑मि॒त्रः
 सौ॒व्र॒त्येन॑रु॒द्रन्दौ॑व्र॒त्येने॑न्द्र॒म्प्रक्री॑डेन॒मरु॑तो॒बले॑न॒साद॑ध्या
 न्प्र॒मुदा॑ ॥ भ॒वस्य॑क॒ण्ठ्यः॑रु॒द्रस्या॑न्त॒र्षाव्य॑म्महा॒दे॒वस्य॑
 ब॒र्कं च॑व्र॒त्यस्य॑व्वनि॒ष्ठुः॑पशु॒पते॑ह॒ पुरी॑तत् ॥ ३ ॥ लो॒म॒भ्यः॑ह॒
 स्वाहा॑लो॒म॒भ्यः॑ह॒ स्वाहा॑त्व॒चे स्वाहा॑त्व॒चे स्वाहा॑लोहि॒ताय॑
 स्वाहा॑लोहि॒ताय॑ स्वाहा॒मेदो॑भ्यः॒ स्वाहा॑मेदो॑भ्यः॒ स्वाहा॑ ॥
 मा॒पु॒से॒भ्यः॑ह॒ स्वाहा॑मा॒पु॒से॒भ्यः॑ह॒ स्वाहा॑स्त्राव॑भ्यः॒ स्वाहा॑

स्त्राव॑ब्भ्य॒हं स्वाहा॑ऽस्थ॒ब्भ्य॒हं स्वाहा॑ऽस्थ॒ब्भ्य॒हं स्वाहा॑म॒ज्ज॒ब्भ्य॒हं
 स्वाहा॑म॒ज्ज॒ब्भ्य॒हं स्वाहा॑ ॥ रेत॑से॒स्वाहा॑पा॒यवे॒स्वाहा॑ ॥ ४ ॥
 आ॒या॒साय॒स्वाहा॑प्रा॒या॒साय॒स्वाहा॑सं॒ब्बा॒साय॒स्वाहा॑व्वि॒या॒साय॒
 स्वाहो॑द्या॒साय॒स्वाहा॑ ॥ शु॒चे॒स्वाहा॑शो॒चंते॒स्वाहा॑शो॒चंमा॒नाय॒
 स्वाहा॑शो॒काय॒स्वाहा॑ ॥ ५ ॥ तप॑से॒स्वाहा॑त॒प्यंते॒स्वाहा॑त॒प्यंमा॒नाय॒
 स्वाहा॑त॒प्साय॒स्वाहा॑घ॒र्माय॒स्वाहा॑ ॥ निष्कृ॑त्यै॒स्वाहा॑प्रा॒यश्चि॒त्त्यै॒
 स्वाहा॑भे॒षजा॒यस्वाहा॑ ॥ ६ ॥ ब॒माय॒स्वाहा॑ऽन्त॑का॒यस्वाहा॑मृ॒त्यवे॒
 स्वाहा॑ ॥ ब्र॒ह्म॑णो॒स्वाहा॑ब्र॒ह्म॑ह॒त्यायै॒स्वाहा॑व्वि॒श्वे॒भ्योदे॒वेभ्य॒हं
 स्वाहा॑द्या॒वां पृथि॒वीभ्य॒हं स्वाहा॑ ॥ ७ ॥

इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ अष्टमोऽध्यायः

हरिं ÷ ॐ वाजंश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च
मेधीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे
श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे ब्रजेन कल्पन्ताम् ॥ १ ॥
प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तञ्च मेऽ
आधीतञ्च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रञ्च मे दक्षश्च मे
बलञ्च मे ब्रजेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥ ओजश्च मे सहश्च मेऽ
आत्माच मे तनूश्च मे शर्म्मच मे वर्म्मच मेऽङ्गानिच मेऽस्थीनिच मे
परुषिच मे शरीराणिच मेऽआयुश्च मे जराच मे ब्रजेन कल्पन्ताम्
॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यञ्च मेऽआधिपत्यञ्च मे मन्युश्च मे भामश्च मे
मंश्च मेऽम्भश्च मे जेमाच मे महिमाच मे वरिमाच मे प्रथि
माच मे वर्षिमाच मे द्वाधिमाच मे वृद्धञ्च मे वृद्धिश्च मे

ब॒ज्ञेन॑कल्पन्ताम् ॥ ४ ॥ (न०) ॥ स॒त्यञ्च॑मे॒श्रद्धा॑च॒मेज॑ग॒च्चमे॒
 धन॑ञ्चमे॒व्वि॒श्वञ्च॑मे॒मह॑श्च॒मेक्री॑डाच॒मेमो॑द॒श्चमे॒जा॒तञ्च॑
 मेजनि॒ष्यमा॑णञ्चमे॒सूक्त॑ञ्चमे॒सुकृ॑तञ्चमे॒ब॒ज्ञेन॑कल्पन्ताम् ॥ ५ ॥
 ऋ॒तञ्च॑मे॒ऽमृत॑ञ्चमे॒ऽय॒क्ष्मञ्च॑मे॒ऽना॑मय॒च्चमे॒जी॒वातु॑श्चमे॒दी॒र्घायु॑
 त्वञ्च॑मे॒ऽनमि॑त्रञ्चमे॒ऽभय॑ञ्चमे॒सु॒खञ्च॑मे॒शय॑नञ्चमे॒सू॒षाश्च॑मे॒
 सु॒दिन॑ञ्चमे॒ब॒ज्ञेन॑कल्पन्ताम् ॥ ६ ॥ ब॒न्ताच॑मे॒ध॒र्ताच॑मे॒क्षे॒मश्च॑मे॒
 धृ॒तिश्च॑मे॒व्वि॒श्वञ्च॑मे॒मह॑श्च॒मेसं॑व्वि॒च्चमे॒ज्ञा॒त्रञ्च॑मे॒सू॒श्चमे॒
 प्र॒सू॒श्चमे॒सी॒रञ्च॑मे॒लय॑श्च॒मेब॒ज्ञेन॑कल्पन्ताम् ॥ ७ ॥ शञ्च॑मे॒
 मय॑श्च॒मेप्पि॒यञ्च॑मे॒ऽनु॒काम॑श्च॒मेका॑म॒श्चमे॒सौम॑न॒सश्च॑मे॒
 भग॑श्च॒मेद्वि॑णञ्चमे॒भ॒द्रञ्च॑मे॒श्रो॒यश्च॑मे॒व्वसी॑यश्च॒मे
 मे॒ब॒श॑श्च॒मेब॒ज्ञेन॑कल्पन्ताम् ॥ ८ ॥ (न०) ॥ ऊ॒क्क्व॑र्चमे॒
 सू॒नृता॑चमे॒पय॑श्च॒मेर॑स॒श्चमे॒घृ॒तञ्च॑मे॒मधु॑चमे॒सगि॑धश्च॒मे

सपीतिश्चमेकृषिश्चमे वृष्टिश्चमे जैत्रं चमौद्धिश्चमे बजेन
 कल्पन्ताम् ॥ ९ ॥ रयिश्चमे रायश्चमे पुष्टिश्चमे पुष्टिश्चमे
 विभुश्चमे प्रभुश्चमे पूर्णश्चमे पूर्णतरश्चमे कुयवश्चमे ऽक्षितश्चमे
 ऽन्नश्चमे ऽक्षुश्चमे बजेन कल्पन्ताम् ॥ १० ॥ वित्तश्चमे वेद्यश्चमे
 भूतश्चमे भविष्यच्चाश्चमे सुगश्चमे सुपत्न्यश्चमे ऽक्रुद्धश्चमे ऽ
 क्रुद्धिश्चमे क्लृप्तश्चमे क्लृप्तिश्चमे मतिश्चमे सुमतिश्चमे बजेन
 कल्पन्ताम् ॥ ११ ॥ व्रीहयश्चमे बवाश्चमे माषाश्चमे तिला
 श्चमे मुद्गाश्चमे खल्लवाश्चमे प्रियङ्गुश्चमे ऽणवश्चमे
 श्यामाकाश्चमे नीवाराश्चमे गोधूमाश्चमे मसूराश्चमे बजेन
 कल्पन्ताम् ॥ १२ ॥ (न०) अश्माश्चमे मृत्तिकाश्चमे गिरयश्चमे
 पर्वताश्चमे सिकताश्चमे वनस्पतयश्चमे हिरण्यश्चमे ऽ
 यश्चमे श्यामश्चमे लोहश्चमे सीसश्चमे त्रपुचमे बजेन कल्पन्ताम्

॥ १३ ॥ अ॒ग्नि॒र॒क्ष॒म॒ऽआ॒प॒र॒क्ष॒म॒व्वी॒रु॒ध॒श्च॒म॒ऽआ॒ष॒ध॒य॒श्च॒
मे॒कृ॒ष्ट॒प॒च॒व्या॒श्च॒मे॒ऽकृ॒ष्ट॒प॒च॒व्या॒श्च॒मे॒ग्रा॒म॒या॒श्च॒मे॒प॒श॒व॒
ऽआ॒र॒ण॒ण॒या॒श्च॒मे॒व्वि॒त्त॒श्च॒मे॒व्वि॒त्ति॒श्च॒मे॒भू॒त॒श्च॒मे॒भू॒ति॒श्च॒मे॒
ब॒ज्ञे॒न॒क॒ल्प॒न्ता॒म् ॥ १४ ॥ व्व॒सु॒च॒मे॒व्व॒स॒ति॒श्च॒मे॒क॒र्म्म॒च॒मे॒श॒क्ति॒
श्च॒मे॒ऽर्थ॒श्च॒म॒ऽए॒म॒श्च॒म॒ऽइ॒त्या॒च॒मे॒ग॒ति॒श्च॒मे॒ब॒ज्ञे॒न॒
क॒ल्प॒न्ता॒म् ॥ १५ ॥ (न०) ॥ अ॒ग्नि॒र॒क्ष॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒सो॒म॒श्च॒म॒
ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒स॒वि॒ता॒च॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒स॒र॒स्व॒ती॒च॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒
मे॒पू॒षा॒च॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒बृ॒ह॒स्प॒ति॒श्च॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒ब॒ज्ञे॒न॒
क॒ल्प॒न्ता॒म् ॥ १६ ॥ मि॒त्र॒श्च॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒व्व॒रु॒ण॒श्च॒म॒ऽ
इ॒न्द्र॒श्च॒मे॒धा॒ता॒च॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒त्व॒ष्ट॒र॒च॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒
म॒रु॒त॒श्च॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒व्वि॒श्वे॒च॒मे॒दे॒वा॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒ब॒ज्ञे॒न॒
क॒ल्प॒न्ता॒म् ॥ १७ ॥ पृ॒थि॒वी॒च॒म॒ऽइ॒न्द्र॒श्च॒मे॒ऽन्त॒रि॒क्ष॒श्च॒म॒ऽ

इन्द्र'श्चामे'द्यौश्चामे'ऽइन्द्र'श्चामे'समा'श्चामे'ऽइन्द्र'श्चामे'
 नक्ष'त्राणिचम'ऽइन्द्र'श्चामे'दिश'श्चम'ऽइन्द्र'श्चामे'ब'ज्ञेन'
 कल्पन्ताम् ॥ १८ ॥ (न०) ॥ अ॒ष्ट'शुश्चामे'र'श्मिश्चामे'ऽदा'
 ष'भ्यश्चामे'ऽधि'पतिश्चाम'ऽउ'पा'ऽशुश्चामे'ऽन्त'ऽर्वा'
 म'श्चाम'ऽऐन्द्र'वायु'व'श्चामे'मै'त्रावरुण'श्चाम'ऽआ'श्विन'श्चामे'
 प्र'तिप्र'स्थान'श्चामे'शु'क्र'श्चामे'म'न्थीचामे'ब'ज्ञेन'कल्पन्ताम् ॥ १९ ॥
 आ'ग्ग'य'ण'श्चामे'वै'श्वदे'व'श्चामे'द'धु'व'श्चामे'वै'श्वान'र'श्चाम'
 ऽऐन्द्रा'ग्ग'श्चामे'म'हा'वै'श्वदे'व'श्चामे'म'रु'त्त्व'तीया'श्चामे'नि'ष्वे'
 व'ल्ल्य'श्चामे'सा'वि'त्र'श्चामे'सा'र'स्व'त'श्चामे'पा'त्की'व'त'श्चामे'
 हा'रि'यो'ज'न'श्चामे'ब'ज्ञेन'कल्पन्ताम् ॥ २० ॥ स्त्रु'च'श्चामे'च'म'सा'श्चामे'
 मे'व्वा'य'व्या'निचामे'द्रो'ण'क'ल'श'श्चामे'ग'गा'वा'ण'श्चामे'ऽधि'ष'व'णो'
 चामे'पू'त'भृ'च्चा'म'ऽआ'ध'व'नी'य'श्चामे'व'वे'दि'श्चामे'

ब॒र्हि॑ इ॒च्छा॑ मे॒ ऽव॒भू॑ थ॒ इ॒च्छा॑ मे॒ स्व॒गा॒ क॒ । र॒ इ॒च्छा॑ मे॒ ष॒ ज्ञे॑ न॒
 क॒ल्प॑न्ताम् ॥ २१ ॥ (न०) ॥ अ॒ग्नि॒ इ॒च्छा॑ मे॒ ध॒र्म॒ इ॒च्छा॑ मे॒ ऽ
 र्क॒ इ॒च्छा॑ मे॒ सू॒र्य॒ इ॒च्छा॑ मे॒ प्प्रा॒ण॒ इ॒च्छा॑ मे॒ ऽश्व॑ मे॒ ध॒ इ॒च्छा॑ मे॒ पृ॒थि॒वी॒ च॒ मे॒
 ऽदि॑ति॒ इ॒च्छा॑ मे॒ दि॒ति॒ इ॒च्छा॑ मे॒ द्यौ॒ इ॒च्छा॑ मे॒ ऽङ्गु॒ ल॒ य॒ः श॒क्क॑ र॒ यो
 दि॒श॑ इ॒च्छा॑ मे॒ ष॒ ज्ञे॑ न॒ क॒ल्प॑न्ताम् ॥ २२ ॥ व॒त्र॒ त॒श्च॑ म॒ ऽऋ॒त॒ व॑
 इ॒च्छा॑ मे॒ त॒ प॑ इ॒च्छा॑ मे॒ सं॒व॒त्स॒र॒ इ॒च्छा॑ मे॒ ऽहो॒ रा॒ त्रे॒ ऽऊ॒र्वा॒ ष्ठी॒ वे॒ बृ॒ह॒द्र॒थ॒न्त॒रे
 च॑ मे॒ ष॒ ज्ञे॑ न॒ ल॒प्प॑न्ताम् ॥ २३ ॥ (न०) ॥ ए॒का॑ च॒ मे॒ ति॒ स्र॒ इ॒च्छा॑ मे॒
 ति॒ स्र॒ इ॒च्छा॑ मे॒ प॒ञ्च॑ च॒ मे॒ प॒ञ्च॑ च॒ मे॒ स॒प्त॑ च॒ मे॒ स॒प्त॑ च॒ मे॒ न॒व॑ च॒ मे॒ न॒व॑ च॒ मे॒
 ऽए॒का॑ द॒श॑ च॒ मे॒ ऽए॒का॑ द॒श॑ च॒ मे॒ त्र॒यो॑ द॒श॑ च॒ मे॒ त्र॒यो॑ द॒श॑ च॒ मे॒
 प॒ञ्च॑ द॒श॑ च॒ मे॒ प॒ञ्च॑ द॒श॑ च॒ मे॒ स॒प्त॑ द॒श॑ च॒ मे॒ स॒प्त॑ द॒श॑ च॒ मे॒ न॒व॑ द॒श॑ च॒ मे॒
 न॒व॑ द॒श॑ च॒ मे॒ ऽए॒कं॑ वि॒ ष्ठा॒ति॒ इ॒च्छा॑ मे॒ ऽए॒कं॑ वि॒ ष्ठा॒ति॒ इ॒च्छा॑ मे॒ त्र॒यो॑ वि॒
 ष्ठा॒ति॒ इ॒च्छा॑ मे॒ त्र॒यो॑ वि॒ ष्ठा॒ति॒ इ॒च्छा॑ मे॒ प॒ञ्च॑ वि॒ ष्ठा॒ति॒ इ॒च्छा॑ मे॒

पञ्चविंशतिश्चमेसप्सविंशतिश्चमेसप्सविंशतिश्चमे
 नवविंशतिश्चमे नवविंशतिश्चाम् ऽएकं त्रिंशच्चाम्
 ऽएकं त्रिंशच्चमे त्रयस्त्रिंशच्चमे ब्रजेन कल्पन्ताम् ॥ २४ ॥

(न०) ॥ चतस्रश्चमे ऽष्टौचमे ऽष्टौचमे द्वादशचमे द्वादशचमे
 षोडशचमे षोडशचमे विंशतिश्चमे विंशतिश्चमे
 चतुर्विंशतिश्चमे चतुर्विंशतिश्चमे ऽष्टाविंशतिश्चमे ऽष्टाविंशतिश्चमे
 शतिश्चमे द्वात्रिंशच्चमे द्वात्रिंशच्चमे षट् त्रिंशच्चमे
 षट् त्रिंशच्चमे चत्वारिंशच्चमे चत्वारिंशच्चमे
 चतुश्चत्वारिंशच्चमे चतुश्चत्वारिंशच्चमे ऽष्टाचत्वारिंशच्चमे
 शच्चमे ब्रजेन कल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ (न०) ॥ त्र्यविंशच्चमे
 त्र्यवीचमे दित्यवाट् चमे दित्यौहीचमे पञ्चाविंशच्चमे
 पञ्चावीचमे त्रिवत्सश्चमे त्रिवत्साचमे तुर्ब्यवाट् चमे तुर्ब्यौहीचमे

ब॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ २६ ॥ प॒ष्ठुवाट् च॑ मे प॒ष्ठुहो च॑ मे ऽउ॒क्षा च॑ मे
 व॒शा च॑ मे ऽऋष॑ भ॒श्च मे॑ व॒हे च॑ मे ऽन॒ड्वाँश्च॑ मे धे॒नुश्च॑ मे ब॒ज्ञेन॑
 कल्पन्ताम् ॥ २७ ॥ (न०) ॥ व्वाजा॑य॒ स्वाहा॑प्प्र॒स॒वाय॒ स्वाहा॑
 ऽपि॒ जाय॒ स्वाहा॑ क॒ृत॑ वे॒ स्वाहा॑ व॒स॑ वे॒ स्वाहा॑ ऽह॒ र्ष॑ त॒ये॒ स्वाहा॑
 ह॒ै मु॒ग्धाय॒ स्वाहा॑ मु॒ग्धाय॑ व्वै न॒ऽशि॒नाय॒ स्वाहा॑ व्वि न॒ऽशि॒न॑
 ऽआ॒न्त्याय॒ नाय॒ स्वाहा॑ न्त्या॑य॒ भौ व॒नाय॒ स्वाहा॑ भुव॑ न॒स्य॒ प॒त॒ये॒
 स्वाहा॑ धि॒ प॒त॒ये॒ स्वाहा॑ प्र॒ जा॒ प॒त॒ये॒ स्वाहा॑ ॥ इ॒य॒न्ते॒ रा॒णि म॒त्रा॒य॑
 ब॒न्ता॒ सि॒ष॒म॒न॑ ऽऊ॒र्जे॒ त्वा व्वृ॒ष्ट्यै॒ त्वा प्र॒ जा॒ न॒ त्वा धि॒ प॒त्त्या॒य॑ ॥ २८ ॥
 आ॒यु॒र्ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां प्रा॒णो ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां अ॒क्षु॒र्ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां ॐ
 श्रो॒त्रं ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां व्वा॒ग् ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां म॒नो॒य॒ज्ञेन॑ कल्पतां
 मा॒त्स्व॒मा ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां ब्र॒ह्मा ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां ज्योति॑र्ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां
 ॐ स्व॒र्ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां पृ॒ष्ठं ब॒ज्ञेन॑ कल्पतां ब॒ज्ञो ब॒ज्ञेन॑ कल्पताम् ॥

स्तोमंश्च बजुश्च ऽऋक्च सामच बृहच्च रथन्तरञ्च ॥ स्वर्देवा
 ऽअगन्तामृताऽअभूमप्प्रजापतेः प्रजाऽअभूम वेद्स्वाहा ॥ २९ ॥

इत्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ शान्त्यध्यायः

हरिं ÷ ॐ ऋचं व्वाचम्प्रपद्ये मनो बजुः प्रपद्ये सामप्राण
 म्प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥ व्वागोजं ÷ सहौजो मयि
 प्राणापानौ ॥ १ ॥ बन्मै छिद्रञ्चक्षुषो हृदयस्य मनसो व्वाति
 तृणाम्बृहस्पतिर्मते दधातु ॥ शन्नो भवतु भुवनस्य बस्पतिः ॥ २ ॥
 भूर्भुवः स्वः ÷ । तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ॥
 धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ कयानश्चिच्छात्रऽआभुवदूती
 सदा वृधः सखा ॥ कया शचिष्ठया वृता ॥ ४ ॥ कस्त्वासत्यो

मदा'नाम्महं हिष्ठो'मत्सु'दन्धसहं ॥ दृढाचि'दारुजै'व्वसु ॥ ५ ॥
 अ'भीषुणहं'सखी'नामवि'ताज'रितृणाम् ॥ श'तम्भ'वास्यूतिभिः ॥ ६ ॥
 क'या'त्वन्न'ऽऊ'त्याभिप्प्र'म'न्दसे'व्वषन् ॥ क'या'स्तो'तृ'ब्भ्य'
 ऽआभर ॥ ७ ॥ इन्द्रो'व्वि'श्व'स्यराजति ॥ शन्नो'ऽअस्तु'द्वि'पदेश'
 अ'तु'ष्पदे ॥ ८ ॥ शन्नो'मि'त्र'ऽशं'व्वरु'णहं'शन्नो'भव'त्व'ब्भ'मा ॥
 शन्न'ऽइन्द्रो'बृह'स्पतिहं'शन्नो'व्वि'ष्णु'रुरु'क्रमः ॥ ९ ॥ शन्नो'व्वात'ः
 प'वता'ऽशन्न'स्तप'तु'सू'ब्भ'ः ॥ शन्नहं'क'नि'क्क'दद्दे'व'ऽप'र्जन्यो'ऽ
 अ'भिव'र्षतु ॥ १० ॥ अहां'नि'शम्भ'वन्तु'नहं'श'ऽरा'त्रीहं'प्र'ति'धीयताम् ॥
 शन्न'ऽइन्द्रा'ग्नी'भवता'म'वो'भिहं'शन्न'ऽइन्द्रा'वरु'णारा'तहं'व्या ॥ शन्न'ऽ
 इन्द्रा'पूष'णा'व्वाज'सा'तौ'श'मिन्द्रा'सो'मा'सु'वि'ताय'शं'ब्भोऽ ॥ ११ ॥
 शन्नो'दे'वी'र'भिष्टु'य'ऽआ'पो'भवन्तु'पी'तये ॥ शं'ब्भो'र'
 भि'स्त्र'वन्तु'नहं ॥ १२ ॥ स्यो'ना'पृ'थि'वि'नो'भवानृ'क्ष'रानि'वेश'नी ॥

बच्छानुहं शर्म सप्रथाहं ॥ १३ ॥ आपोहिष्ठामयोभुवस्तान्
 ऽऊर्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ १४ ॥ बोवःशिव
 तमोरसस्तस्यभाजयतेहनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥ १५ ॥ तस्मा
 ऽअरङ्गमामवोबस्यक्षयायजिह्वथ ॥ आपोजनयथाचनहं ॥ १६ ॥
 द्यौःशान्तिं रन्तरिक्षं शान्तिं पृथिवीशान्तिरापहं शान्तिरो
 षधयहं शान्तिः ॥ वनस्पतयहं शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति
 ब्रह्मशान्तिहं सर्वहं शान्तिहं शान्तिरेवशान्तिहं सामाशान्ति
 रेधि ॥ १७ ॥ दत्तेदहं मामित्रस्यमाचक्षुषासर्वाणिभूतानि
 समीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहञ्चक्षुषासर्वाणिभूतानिसमीक्षे ॥
 मित्रस्यचक्षुषासमीक्षा महे ॥ १८ ॥ दत्तेदहं मा । ज्योक्तेसन्दृशि
 जीव्यासज्योक्ते सन्दृशिजीव्यासम् ॥ १९ ॥ नमस्ते
 हरसेशोचिषेनमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे ॥ अत्र्यास्ते ऽअस्मत्पन्तुहेतयः

पावकोऽअस्मिन्भ्यः शिवो भव ॥ २० ॥ नमस्तेऽस्तु विद्युते
 नमस्तेस्तनयित्ववे ॥ नमस्ते भगवन्नस्तु बतः स्वः समीहसे ॥ २१ ॥
 बतोयतः समीहसे ततो नोऽअभं यद्गुरु ॥ शत्रुः कुरु प्रजाभ्योऽ
 भयन्नः पशुभ्यः ॥ २२ ॥ सुमित्रियान् आपः ओषधयः
 सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु षोऽस्मान् द्वेष्टि बञ्चं वयन् द्विषमः ॥ २३ ॥
 तच्च क्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्चक्रमुच्चरत् ॥ पश्येम शरदः शतञ्जीवेम
 शरदः शतः शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाहं
 स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥ २४ ॥

इति शान्त्यध्यायः ।

अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः ।

हरिः ॐ स्वस्तिन् ऽइन्द्रो'वृद्धश्चा'वाह स्वस्तिनः ॐ पूषा
 विश्ववेदाह ॥ स्वस्तिन् स्ताक्षर्यो'अरिष्टदृनेमिह स्वस्तिनो बृहस्पतिं
 र्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः ॐ पृथिव्याम्पय ऽओषधीषु पयो दिव्युन्त
 रिक्षेपयोधाह ॥ पयस्वतीह प्रदिशः सन्तु महर्षम् ॥ २ ॥ ॐ
 विष्णो'रराट'मसि विष्णो'ह श्रप्त्रे'स्थो विष्णो'ह स्यूरं
 सि विष्णो'र्ध्रुवो'सि ॥ वैष्णवमसि विष्णो'वेत्त्वा ॥ ३ ॥ ॐ
 अग्निर्देवता'व्वातो'देवता'सूषो'देवता'चन्द्रमा'देवता'व्सवो'देवता'
 रुद्रा'देवता' ऽऽदित्या'देवता'मरुतो'देवता' विश्वे'देवा'देवता'
 बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो' देवता'व्वरुणो'देवता' ॥ ४ ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे
 नातिभवे भवस्व मां भवोद्वाय नमः ॥ ५ ॥ वामदेवाय नमो

ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः
 कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो
 बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ ६ ॥
 अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो
 नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ७ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय
 धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः
 सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु
 सदा शिवोऽम् ॥ ९ ॥

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्ते ऽअस्तुमामाहिः सीह ॥
 निवर्त्तयाम्या युषे ऽन्नाद्यायप्प्र जननायरायस्पपोषाय
 सुप्रजास्त्वायसुवीर्षाय ॥ १० ॥
 ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥ बद्धन्तन् ऽ

आसुंव ॥ ११ ॥ ॐ द्यौःशान्तिं रन्तरिक्षं शान्तिं पृथिवीशान्तिं
 राप्तं शान्तिं रोषं धयं शान्तिं ॥ वनस्पतयं शान्तिं विश्वं
 देवांशान्तिं ब्रह्म शान्तिं सर्वं शान्तिं शान्तिं रेव शान्तिं
 सामाशान्तिं रेधि ॥ १२ ॥ ॐ सर्वेषां वा एष वेदानां रसो
 यत्साम सर्वेषामेवैन मेतद्वेदानां रसेनाभिषिञ्चति ॥ १३ ॥

इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अनेन श्रीरुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानी शङ्कर महारुद्रः प्रीयतां
 न मम ।

ॐ साम्ब सदाशिवार्पणमस्तु ।

इति रुद्राष्टाध्यायी समाप्ता ।



गंगा अकाश

संस्कृत

— १०००

१०००

१०००

१०००

Santipur

Dikera

Barka

Assam

Assam

Assam



Assam

TIME SHOPPIN

